।। श्री ऋभादिक चतुर्विंशति जिनाय नमः।।

विशद

देव शास्त्र गुरु एवं अतिशय क्षेत्र पूजन

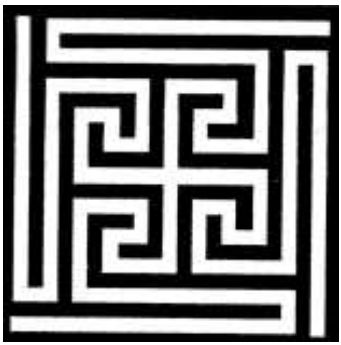

नंद्यावर्त स्वस्तिक

रचयिता

प. पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

प्रकाशक

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **देव शास्त्र गुरु एवं अतिशय क्षेत्र पूजन**
कृतिकार : **प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी महाराज
आर्यिका भक्तिभारती माताजी, क्षुल्लिका वात्सल्य भारती माताजी,

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी
ब्र. सपना दीदी (9829127533)
संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : 50/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : (1) **विशद साहित्य केन्द्र**
पद्म जी रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(2) **हरीश जैन**
गांधी नगर, दिल्ली, मो. 098181157971
(3) **सुरेश जैन सेठी**
शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर, मो. 9413336017
(4) **श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर नसिया**
वर्द्धमान मार्ग, टोंक (राजस्थान), 9929793466
(5) **विशद-विशाल त्यागी भवन**
सिद्धार्थ नगर, जयपुर (राजस्थान), 93114515597, 9667140858

e-mail : vishadsagar11@gmail.com

प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**

मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन (बड़ागाँव) मो. 9509529502

भक्तिप्रसून

दोहा- जिन पूजा करके विशद, करें प्रभू गुणगान।
इस भव के सब सौख्य पा, पावें पद निर्वाण।।

देवाधिदेव जिनेन्द्र भगवान की अनेक प्रकार की सामग्री से युक्त होकर उनके गुणों का स्तवन करना पूजन है। यद्यपि जिनेन्द्र भगवान वीतरागी हैं। पूजन से प्रसन्न नहीं होते हैं और निन्दा से नाराज नहीं होते हैं। किन्तु पूजन से तथा पूजा सामग्री के समर्पण से हमारे परिणामों में निर्मलता आती है व पाप कर्मों का नाश और पुण्य का संचय होता है।

भावों की निर्मलता के लिए ही पूजक अच्छे-अच्छे द्रव्य अर्पण करता है। अच्छे-अच्छे शब्दों से प्रभु का गुण स्तवन करता है। पूर्वाचार्यों का कथन है कि जो जीव प्रभु पूजन के प्रति जितनी लगन रखता है उसके ज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम भी उतना ही बढ़ता है। सारे आगामी विघ्न टल जाते हैं तथा बिगड़े काम प्रभु भक्ति से अनायास ही बन जाते हैं।

प्रस्तुत कृति में जैनदर्शन के प्रवर्तक युग दृष्टा अपनी साधना व पुरुषार्थ से स्वयं को कर्मों से मुक्त करते हुए तीर्थंकर पद तक पहुँचे और सिद्धालय में विराजमान हो गये उन्हीं महान आत्माओं के गुणों की आराधना और पूजार्चना पूर्णतः निर्विकार एवं निकांक्षित भावों से **प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने यहाँ की है। अपने अन्तश में उठे प्रभु भक्ति के भावों को लेखनी का रूप देकर वर्षायोग 2016 टोंक में प्रस्तुत पुस्तक की रचना की है।

नित्य प्रति पूजन करने वाले श्रावक श्राविकाओं के लिए यह पुस्तक विशेष कार्यकारी है। सप्ताह में वार के अनुसार अलग-अलग तीर्थंकर की पूजा व चालीसा करें। नितप्रति नई-नई पूजन करते रहने से उपयोग में स्थिरता बनी रहती है और अथाह पुण्य का संचय होता है। पुनः गुरुदेव के श्री चरणों में निवेदन आगे भी इसी तरह श्रुत की आराधना कर उससे संचित ज्ञान की कुछ बूँदे श्रावक-श्राविकाओं पर बरसाते रहें। इसी भावना के साथ गुरुवर के श्री चरणों में त्रि-भक्ति पूर्वक नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

- मुनि विशाल सागर जी संघस्थ
वर्षायोग 2016, टोंक (नशियाँ)

भक्तिप्रसून

प्रभु श्रद्धा पूजा भक्ति का, मुझे उपहार मिल जाए।
श्रेष्ठ श्रद्धा के फूलों से, मेरा जीवन ये खिल जाए।।
बुझा वरदान का दीपक, विशद मेरा है सदियों से।
प्रभु विज्ञान का दीपक, सुभम् अब श्रेष्ठ जल जाए।।

अनन्तकाल से यह जीव इस भव सागर में भ्रमण कर रहा है। ज्ञान और श्रद्धान के अभाव में वह संसारिक दुखों के सागर में गोता लगा रहा है, दुखों से बचने के लिए प्राणी दुखों से दूर भागता है; लेकिन हेतु दुख के ही एकत्र करता है। सुख की चाह रहती; लेकिन कर्माधीन होकर हम रागद्वेष रूपी परिणति करता हैं जो दुःख का वेदन करवाते हैं। दुखों से बचने का उपाय तो प्रभुभक्ति देव-शास्त्र-गुरु पर सच्चा श्रद्धान है, यही कष्ट मिटाने में हेतु है।

भक्ति से जीव को निजस्वरूप का भान हो ऐसी भावना भानी चाहिए और जीव का एकमात्र लक्ष्य सिद्ध अवस्था को प्राप्त करना ही होना चहिए। यही वह अवस्था है जिसमें जीव इस संसार से मुक्त हो जाता है जिसके बाद उसे सांसारिक सुख-दुख दोनों ही से मुक्ति मिल जाती है।

परम पूज्य आचार्य गुरुवर का 2016 का चातुर्मास राजस्थान प्रांत के टोंक जिले में हुआ। चातुर्मास के समय ही स्थानीय भक्तों ने आचार्य श्री से निवेदन किया कि आप टोंक के आसपास स्थित अतिशय क्षेत्रों की पूजनों की रचना करें। भक्तों के निवेदन के अनुरूप आचार्य श्री अपने श्रद्धा शब्दों को देव-शास्त्र-गुरु भक्ति के रूप में श्रृंखला बद्ध करके पूजन, चालीसा, आरती का संग्रह तैयार कर दिया।

टोंक स्थित नसिया जी में एकबार नहीं दो, तीनबार भू-गर्भ से प्रतिमाएँ प्रगट हुईं, ऐसी अतिशयकारी भूमि एवं जिनालय पूज्यनीय है।

गुरुवर के चरणों में त्रयबार नमोस्तु।

पाप और पारा कभी पचता नहीं है,
कपूर जलाने पर कुछ बचता नहीं है।
इंसान को सुख समृद्धी पाने के लिए,
भक्ति के अलावा कोई रास्ता नहीं है।

– ब्र. सपना दीदी

–: पुण्यार्जक :–

1. **वीरेन्द्र कुमार, देवेन्द्र कुमार, महेन्द्र कुमार, अंकुर, अभिषेक, शुभम, धारांशा, आरव** पाटनी परिवार (कापरेन वाले) अशोक पुस्तक मन्दिर,जवाहर बाजार, टोंक (राज.) मो. 9414304151
2. **कजोड़मल जी, राजेश कुमार जैन** (हाडी गाँव वाले) टोंक (राज.), मो. 9509612348
3. **पारस कुमार, विकास जैन, निखिल, अक्षय जैन** (सोनी) नगर फोर्ट वाले, कम्पू टोंक (राज.) मो. 9772953955
4. **माणकचन्द, नरेन्द्र कुमार, राकेश कुमार, ओमप्रकाश, पंकज देवेन्द्र कुमार** (टी.वी.वाले,) टोंक (राज.) मो. 9214363238
5. **बाबूलाल, अमित कुमार जैन** (समिधि वाले) टोंक (राज.) त्रिलोकचन्द जी, ज्ञानचन्द जैन, टोंक (राज.) मो. 92145656050
6. **टीकमचंद, जिनेश कुमार जैन** (फूलेता वाले) टोंक (राज.) मो. 9414315887
7. **चन्द्रप्रकाश, पारस चन्द, सन्दीप कुमार, शुभम हिमांशु जैन** आंडरा टोंक **(राज.)**, मो. 9214860983
8. **महावीर जी, विकास कुमार जैन, रविकुमार** (भरणी वाले) टोंक (राज.)
9. **शिवराज जी, अनिल कुमार, अर्चित कुमार, अर्पित कुमार जैन** (ट्रांसपोर्ट वाले) टोंक, 9214334888
10. **बाबूलाल जी, प्रदीप कुमार जैन** (देवली वाले) टोंक (राज.) – गुप्त दान
11. **श्री कपूरचन्द, ओमप्रकाश, अशोक कुमार, महेन्द्र कुमार जैन** (टोरड़ी वाले), टोंक (राज.)

ज्ञान बिना ना आन जगत में सुख को कारण।
ज्ञान दान के लिए हमेशा तत्पर रहना चहिए।

अनुक्रमणिका

पंचामृत अभिषेक पाठ	8
लघु शान्तिधारा	16
लघु विनय पाठ - I	19
पूजा पीठिका	20
विनय पाठ - II	22
पूजा पीठिका	24
मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	27
श्री देव शास्त्र गुरु पूजन	32
श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन (लघु)	38
समुच्चय देव-शास्त्र-गुरु पूजन	40
श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन (लघु कर्मदहन विधान पूजा)	43
श्री नवदेवता पूजा	51
श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन	56
श्री आदिनाथ भगवान की पूजा (टोंक नसिया)	59
श्री आदिनाथ पूजन (पुरानी टोंक)	64
श्री आदिनाथ भगवान पूजन (मालपुरा)	67
श्री आदिनाथ भगवान पूजन (सांगानेर)	72
श्री पद्मप्रभ जिन पूजन (बाड़ा पद्मपुरा)	76
श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन (मैंदवास)	80
श्री चन्द्रप्रभु पूजन (काफला)	86
श्री चन्द्रप्रभु पूजन (देहरा तिजारा)	89
श्री पुष्पदन्त पूजन	94
श्री वासुपूज्य पूजन	98
श्री शांतिनाथ भगवान पूजा (टोंक नसियाँ)	101
श्री शांतिनाथ की पूजा (बड़ा मन्दिर टोंक)	106
श्री शांतिनाथ पूजा (सांखना)	111
श्री शांतिनाथ पूजा (निवाई)	116
श्री शांतिनाथ पूजा (आवाँ)	121
श्री मुनिसुव्रत पूजा	125
श्री नेमिनाथ पूजा (पुरानी टोंक)	128
श्री नेमिनाथ भगवान पूजा (नैनवा)	132
श्री पार्श्वनाथ भगवान पूजा (आदर्श नगर टोंक)	137
श्री पार्श्वनाथ भगवान पूजा (निमोला)	142
श्री पार्श्वनाथ भगवान पूजा (कचनेर)	147
श्री महावीर स्वामी पूजा (चाँदनपुर)	151
अष्टाह्निका पर्व पूजन	156

रविव्रत पूजन 162
आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज पूजन 166
अर्घावली 169
महाअर्घ्य 174
शान्ति पाठ 175
विसर्जन पाठ 176

चालीसा खण्ड

चौंसठ ऋद्धि चालीसा 177
टोंक नसिया के श्री आदिनाथ भगवान का चालीसा 179
बाड़ा पद्मपुरा श्री पद्मप्रभु भगवान का चालीसा 181
मैंदवास के श्री चन्द्रप्रभु भगवान का चालीसा 183
श्री पुष्पदंत चालीसा 185
श्री वासुपूज्य चालीसा 187
श्री शांतिनाथ भगवान का चालीसा (टोंक नसियाँ) 189
श्री शांतिनाथ भगवान का चालीसा (सांखना) 191
श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा 193
श्री पार्श्वनाथ चालीसा (निमोला) 195
श्री पार्श्वनाथ चालीसा 197
श्री महावीर भगवान का चालीसा (चाँदनपुर) 199
आचार्य श्री विशद सागर जी का चालीसा 201

आरती खण्ड

नवदेवता की आरती 37
भजन श्री आदिनाथ जी का 58
बाहुबली स्वामी की आरती 161
चौबीस तीर्थंकर आरती 203
श्री आदिनाथ जिन आरती (टोंक नसिया) 204
श्री आदिनाथ भगवान की आरती 205
श्री पद्मप्रभु भगवान आरती बाड़ा पदमपुरा-करहूँ आरती आज 206
श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आरती- ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी 207
श्री शांति कुन्थु अरहनाथ भगवान की आरती 208
श्री शांतिनाथ जिन आरती (टोंक नसिया) 209
श्री मुनिसुव्रत भगवान आरती 210
श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती 211
श्री महावीर भगवान की आरती 212
श्री बाहुबली जी की आरती 213
क्षेत्रपाल जी की आरती 214
पद्मावती माता की आरती 215
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती 216

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नामक अनुपम, अनन्त चतुष्टम अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टी को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ! इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नम: स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधरयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष इनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमिका करता हूँ!, अमृतजल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्री जलेन भूमि शुद्धि करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित इसी पीठ को, प्रच्छलित मैं करूँ! सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ! मैं अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान।।
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ! तव, जिन पद आप झुका कर माथ।।8।।

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा।।1।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नये स्वाहा।।2।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा।।3।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा।।4।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा।।5।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा।।6।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा।।7।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा।।8।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा।।9।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा।।10।।

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान।।
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
विशद कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्मो इदं अर्घ्यं पंचं दीपं धूपं चरुं बलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रापाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रापाल हो रक्षपाल तुम, जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान।।
यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान।।10।।

ॐ आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्रादि पंच क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरूं वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्यं

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरू शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्।।
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्यं निर्व.

चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।13।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

जल से अभिषेक करें

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा। (यह मंत्र आगे सभी को बोलना है खाली स्थान की जगह में।)

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धुप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अंजली बद्ध शीश पर, रखके अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ।।
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार।।16।।

ॐ ह्रीं. ..शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।
लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार।।17।।

ॐ ह्रीं. ..नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।
तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार।।18।।

ॐ ह्रीं ..दाड़िम रसेनजिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान।।19।।

ॐ ह्रीं. ..आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्क...के रस द्वारा, देते जिन के शीश पे धार।।20।।

ॐ ह्रीं ..रसेनाभिसिंचमामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार।।
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार।।21।।

ॐ ह्रीं ....घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवलल दुग्ध से देते धार।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार।।
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अत: आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं ...दुग्धाभिषेक करोमीति स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
इससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान।।
मन वांछित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वत: ही, फल पाते हैं विस्मयकार।।23।।

ॐ ह्रीं ..... दध्माभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दश्शाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधि अभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक।।
मिश्रित कर उज्ज्वल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष।।24।।

ॐ ह्रीं...सर्वौषधि जिनाभिषेचयामि करोमीति स्वाहा।

दोहा- **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार कलश से अभिषेक करें

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, इनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे.... नाम..... नगरे..... एतद्..... जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोनममासे.... मासे....पक्षे.... तिथौ..... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक- श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थ चतुःकलशेनजिनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार।
करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार।।
निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।
नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाएँ हम भी भाग्य।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग।।

मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
विशद भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

सुगंधित कलशाभिषेक करें

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलाशाभिषेकेन जिनभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा– **जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।**
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषीमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।
रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक।।29।।

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप।
इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप।।
काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय।
विशद आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।
पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।
कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, विशद रहा जो निस्कारण।।31।।

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुःसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं...अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु । ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम् (नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट्स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ्य

शांति धारा क रके हे प्रभू, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
विशद शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

मानो जिन गिरि से गिरी, जलधारा हे नाथ!।
गंधोदक उत्तमांग उर, विशद लगाएँ माथ ।।

आचार्योपाध्याय- सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज- सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा.....।। टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा- जिन शीश...।।1।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा-जिन शीश...।।2।।
गिरि तरूवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिसमें मानो।
जो अकृत्रिम ना निर्मित किसी के द्वारा-जिन शीश।।3।।
जिन शीश के धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिस भक्ती बिन यह है संसार असारा-जिन शीश...।।4।।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा-जिन शीश...।।5।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा-जिन शीश...।।6।।
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा-जिन शीश...।।7।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा-जिन शीश...।।8।।

लघु विनय पाठ - I

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव जी, कर्म नशाये आठ।।
शिव वनिता के ईश तुम, अनन्त चतुष्टय वान।
मुक्ति वधु के कन्त हो, देते शिव सोपान।।
पीड़ा हारी लोक में, भवदधि नाशन हार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत सत्येन्द्र।।
भविजन को भव सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्मबन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।
चरण कमल ती पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भविजीवों को मोक्ष पद, करते आप प्रकाश।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाये राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को 'विशद' विराग।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो! आया तुमरे द्वार।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्य उपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अन्त।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।

अथ अर्हंत पूजा प्रतिज्ञायां.... ।। पुष्पाजलिं क्षिपामि।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चत्तारि मंगलं, अरहिन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि। साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांग वाणी प्रथमानुयोग, करुणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!।
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञाये जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधान पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋषी महान।
निस्पृह होकर करें साधना, विशद करें स्व पर कल्याण।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नो भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।
भेद आठ औषधि ऋद्धी के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाएँ मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।

।। इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

विनय पाठ - II

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥ १॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥ २॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार॥ ३॥
हर्ता अघ अँधियार के, कर्ता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धर्ता निजगुण रास॥ ४॥
धर्मामृत उर जलधि सौं, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग भूप॥ ५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥ ६॥
भविजन कौं भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री सुर खग इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जनम-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥ १२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥ १३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥ १४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अजान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥ १५॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥ १६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥ १७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप-समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार॥ १९॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, यातैं करौं पुकार॥ २०॥
वंदौ पाँचों परमगुरु, सुर-गुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥ २१॥
चौबीसौं जिनपद नमों, नमों सारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यौ पाठ सुखदाय॥ २२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥ १॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहन्तदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दूँ स्वयमेव॥ २॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दूँ मन-वच-काय॥ ३॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करण, हरो असाता कर्म॥ ४॥
या विधि मंगल करनतैं, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भवसागर दृढ़ पोत॥ ५॥

।। अथ अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

चत्तारि मंगल-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं, सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पांजलि क्षिपामि।

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ १॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ २॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मतः॥ ३॥
एसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं॥ ४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्वीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥ ५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥ ६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ ७॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं गर्भजन्मतपज्ञानमोक्ष कल्याणक प्राप्तश्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशांग वाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुङ्गवाय, स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जि-तदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोकवितैक-चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्, भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोध वह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥ ५॥

ॐ श्री विविधयज्ञप्रतिमाग्रे जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगलपाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति स्वस्तिश्री शीतलः।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।

श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधा।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारी।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥
जङ्घावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्निदक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्रकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष- सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं - विषा दृष्टिविषं विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मल्लौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील सुगिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूती हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ! ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्य मय, होवे सकल समाज॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ती जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभू जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री देव शास्त्र गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

श्री देव-शास्त्र- गुरु का गौरव, गुण तीर्थंकर के गाते हैं।
हैं विद्यमान तीर्थेश परम, हम परमेष्ठी को ध्याते हैं।।
जिनधर्म लोक में पूज्य विशद, जिन बिम्ब विरागी हैं पावन ।
निर्वाण क्षेत्र जिन सहस्रनाम, का उर में करते आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु विद्यमान विंशतिजिन चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ : स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो।
चौबीस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।

सोरठा- **प्रासुक निर्मल नीर, कलश में हम भर लाए हैं।**
जन्म जरा की पीर, हरने को आए प्रभो!।।

(शम्भू-छन्द)

भर जाएँ तीनों लोक प्रभू, हमने इतना जल पी डाला।
न प्यास बुझी हे नाथ! मेरी, चेतन कर्मों से है काला।।
अब चेतन को धोने हेतू, प्रभु नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई! पूजन को ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र -गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो।
चौबीस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो ।।

सोरठा- **चन्दन यह गोसीर, केशर में घिस लाए हैं।**
मिट जाए अब भव पीर, अर्चा करते आपकी ।।

(शम्भू छन्द)

यह मोह राग का दावानल, सदियों से झुलसाता आया ।
किंचित् मन की ना दाह मिटी, हे नाथ ! शरण को ना पाया।।
भव ताप नशाने हेतू प्रभु, यह चंदन घिसकर लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई पूजन को ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबीस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।।

सोरठा- **अक्षय अक्षत श्वेत, यहाँ चढ़ाने लाए हैं ।**
अक्षय भाव समेत, पूजा करते नाथ ! हम।।

(शम्भू छन्द)

क्षय रहित श्रेष्ठ अक्षय सुख को, पाने का भाव ना आया है।
जो मिला हमें पद उसमें ही, जीवन का समय गँवाया है।।
अब अक्षय अव्यय पद पाने, उज्ज्वल अक्षत ये लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई! पूजन को ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।।

सोरठा- **सुरभित लाए फूल, पूजा करने के लिए।**
पाएँ भव का कूल, काम रोग क्षय हो मेरा।।

(शम्भू छन्द)

पुष्पों की सुरभि से केवल, यह तृप्त नाशिका होती है।
आतम के गुणमय पुष्पों की, दुर्गन्ध वाटिका खोती है।।

निज के गुण निज में पाने को, यह सुमन संजोकर लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ-आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई ! पूजन को ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।।

सोरठा- **चरु ताजे रसदार, शुद्ध बनाकर लाए हैं।**
क्षुधा रोग का क्षार, करने आए तव चरण।।

(शम्भू छंद)

षट् रस व्यंजन खाने से, इस तन का पोषण होता है।
भक्ती मय व्यंजन श्रेष्ठ सरस, निज क्षुधा रोग को खोता है।।
चेतन की क्षुधा मिटे स्वामी, नैवेद्य सरस यह लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई! पूजन को ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व .स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो , सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।।

सोरठा - **जला रहे यह दीप, रत्नमयी हम हे प्रभो!।**
श्री जिन चरण समीप, मोह महातम नाश हो।।

(शम्भू छन्द)

शुभ दीपक की मालाओं से, प्रभु ! जग का तिमिर नशाते हैं
है मोह तिमिर अर्न्तमन में, वह तिमिर मिटा न पाते हैं।।
चेतन के दिव्य प्रकाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई! पूजन को ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो ।।

सोरठा- **खेने लाए धूप, अग्नी में सुरभित प्रभो!।**
पाने सुपद अनूप, कर्म नाशकर अष्ट हम ।

(शम्भू छन्द)

सुरभित यह धूप,द्रव्यमय शुभ, नभ मण्डल को महकाती है
हे नाथ पाप की ज्वाला में, जो धूम बनी उड़ जाती है।।
कर्मों का धुआँ उड़ाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई! पूजन को ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूहअष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो ।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो।।

सोरठा- **ताजे फल रसदार, चढ़ा रहे हैं भाव से।**
पाने भव से पार, मोक्ष महाफल प्राप्त हो

(शम्भू छन्द)

शुभ योग्य ऋतू आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
फल योग्य ऋतू के जाते ही, वह फल सारे झड़ जाते हैं।।
अब सरस भक्ति का फल पाने, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई ! पूजन को ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

देव- शास्त्र- गुरुवर की जय हो, विहरमान जिनवर की जय हो
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, सिद्ध भूमि अम्बर की जय हो ।।

सोरठा- **चढ़ा रहे यह अर्घ्य, अष्ट द्रव्य का श्रेष्ठतम ।**
पाने सुपद अनर्घ्य, चरण शरण में हे विभो !।।

(शम्भू छन्द)

पथ में आने वाली बाधा, हमको व्याकुल कर जाती है।
किन्तू व्याकुलता इस मन की, कर्मों का बंध कराती है।
अब पद अनर्घ्य शाश्वत पाने, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं ।
हम देव शास्त्र गुरु पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।
आओ- आओ रे सभी नर नार, प्रभू के अर्चन को।
कटते हैं कर्म अपार, आओ रे भाई ! पूजन को ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूहअनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **भक्ति भाव से हम हुए, आज यहाँ वाचाल ।**
देव शास्त्र गुरु की विशद, गाते हैं जयमाल ।।

।।पद्धरी छन्द।।

जय देव श्री अरहंत कहे, जय कर्म विनाशक सिद्ध रहे।
जय छियालिस गुण के धारी हैं, जय दोष रहित अविकारी हैं।। 1।।
जय चार चतुष्टय वान प्रभो !, जय समवशरण के ईश विभो।
जय दिव्य देशना वान कहे, जो वीतराग विज्ञान रहे।। 2।।
ॐकार रूप जिनकी वाणी, सुनते हैं इस जग के प्राणी।
जो स्याद्वाद अनेकान्तमयी, जग जीवों की है कर्म क्षयी।। 3।।
जिन गणधर ने गूँथी वाणी, जो रही जगत की कल्याणी।
जो ग्यारह अंगों वान रही, शुभ चौदह पूरब रूप सही।। 4।।
गुरुवर हैं रत्नत्रय धारी, जो दोष रहित हैं अविकारी।
जो विषयाशा से हीन रहे, जो संगारम्भ विहीन कहे।। 5।।

जो ज्ञान ध्यान तप लीन अहा, शिव पद ही जिनका लक्ष्य रहा।
हैं छत्तिस पच्चिस गुणधारी, गुण आठ बीस के अधिकारी।। 6।।
हे देव-शास्त्र-गुरु उपकारी, हो तीन लोक मंगलकारी।
तुम चरण प्रार्थना है मेरी, मिट जाए भव-भव की फेरी।। 7।।
हम भाव सहित महिमा गाते, नत हो चरणों में सिरनाते।
हम को प्रभु कृपा प्रदान करो, अब मेरे सारे कष्ट हरो।। 8।।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु की रही, महिमा अपरम्पार ।**
शिव दर्शायक जो 'विशद', वन्दन बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **ध्याते हैं हम भाव से, करते हैं गुणगान ।**
चलें आपकी राह पर, पाएँ शिव सोपान ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज– इह विधि मंगल आरति कीजे.....

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी।। नव देवों..
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता।। नव देवों..
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की।। नव देवों.
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की।। नव देवों..
पॉचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की।। नव देवों.
छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की।। नव देवों.
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की।। नव देवों..
आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी।। नव देवों..
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की।। नव देवों..
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे।। नव देवों..

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन (लघु)

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु विद्यमानविंशति जिन, अनन्तानन्तसिद्ध, निर्वाण भू समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, प्रभु मोह तिमिर विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाश दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाल

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।**
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय देव-शास्त्र-गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकर समूह ! श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठी समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

अनादिकाल से जग में स्वामिन, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहीं पहचाना॥
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने में अबतक मैंने, पर में की झूठी ममता है॥
चन्दन-सम शीतलता पाने, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं॥
अक्षयनिधि निज की पाने अब, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से विंन्ध करके, चहुँगति दु:ख उपजाया है॥
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई॥
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़दीप विनश्वर को अबतक, समझा था मैंने अजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञानदीप से, मिटा मोह का अँधियारा॥
ये दीप समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग-द्वेष नशायेगी॥
उस शक्ति दहन प्रकटाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बादाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निज गुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया॥

अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये॥
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

दोहा- **देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।**
अव वरणूँ जयमालिका, करूँ स्तवन गुणगान॥

नशे घातिया कर्म अरहन्त देवा, करें सुर-असुर-नर-मुनि नित्य सेवा।
दरशज्ञान सुखबल अनन्त के स्वामी, छियालिस गुणयुत महाईशनामी॥
तेरी दिव्यवाणी सदा भव्य मानी, महामोह विध्वंसिनी मोक्ष-दानी।
अनेकांतमय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैनवाणी॥
विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश-ज्ञान-भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मंडित मुकति पथ प्रचारी॥
विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विहरमान वंदूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी॥

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तर ले रे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्य: अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन (लघु कर्म दहन विधान पूजा)

स्थापना (दोहा)

वर्ग सहित दल कमल वसु, सन्धी तत्त्वों वान।
स्थापित हीं कार कर, ब्रह्म स्वर वेष्टित मान।।
अन्त पत्र की सन्धि में, ॐकार का स्थान।
हीं कार युत मंत्र सब, सर्व सिद्धि मय जान।।
बड़भागी वे लोक में, ध्यावें जो कर ध्यान।
काल रूप गजराज को, हैं जो सिंह समान।।

ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।
निर्मलता उपमातीत अहः, पाने की बारी आई है।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु (ज्ञानावरणीय कर्म) विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाऐंगे।
हम भाव बनाए निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाऐंगे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसारताप (दर्शनावरणीय कर्म) विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह चरण चढ़ाने हम आए।।

जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये (मोहनीय कर्म) विनाशनाय अक्षतं नि. स्वाहा।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
वे काम रोग का नाश करें, जो पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो कामबाण (अन्तराय कर्म) विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है इस तन का वेतन।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग (वेदनीय कर्म) विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।
हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार (नाम कर्म) विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।
ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म (गोत्रकर्म) विनाशनाय धूपं नि. स्वाहा।

जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।
जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर हैं जाते।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये (आयु कर्म) विनाशनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको विसराते हैं।
पाते अनर्घ्य पद वे प्राणी, जो जिनपद अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो (अष्ट कर्म) विनाशनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (छन्द छप्पय)

जल से त्रय रुज नशें, त्रास भव मैटे चन्दन।
अक्षत अक्षयवान्, पुष्प से काम निकन्दन।।
क्षुधा रोग नैवेद्य, दीप मोहान्ध नशावे।
धूप जलाए कर्म, मोक्ष फल फल से पावे।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर जिन का अर्चन।
किए भाव से विशद, प्राप्त हो सम्यक् दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा

दोहा- **शांतीधारा दे रहे,शांती पाने नाथ!।**
मुक्ती पथ में आपका,रहे हमेशा साथ।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा- **पुष्पांजलि करते विशद,चरण कमल में आज।**
तव चरणों में आए हम,पाने शिवपद राज।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नोट-(कर्म दहन के आठ अर्घ्य अग्नि में धूपदाने में धूप क्षेपण करते हुए मंत्रोच्चार पूर्वक चढ़ांए)

ज्ञानावरण कर्म (दोहा)

ज्ञानावरणादिक सभी,मति श्रुत अवधिज्ञान।
मनः पर्यय केवल्य को,ढके आवरण जान।।
पंचावरण विनाश कर,हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की,से हो पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं मनःपर्यय ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने मम् ज्ञानावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(दर्शनावरण कर्म)

चक्षु अचक्षु अवधि तथा, केवल दर्शन चार।
कर्म दर्शनावरण है, निद्रा पंच प्रकार।।
कर्म दर्शनावरण नश, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।2।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम दर्शनावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(मोहनीय कर्म)

भेद मोहनीय कर्म के, बतलाए अठबीस।
दर्शन मोह के तीन हैं, चारित के पच्चीस।।
सोलह भेद कषाय के, नो कषाय सब नाश।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिविध दर्शन मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सोलह विधि चारित्र मोहनीय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं नव प्रकार अकषाय मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम मोहनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अन्तराय कर्म)

दान लाभ भोगोपभोग,और वीर्य पहिचान।
भेद कहे अन्तराय के,करें गुणों की हान।।
अन्तराय को नाशकर,हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की,से हो पूरी आस।।4।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अन्तरायकर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वेदनीय कर्म (शम्भू छन्द)

साता असाता कर्म अघाती,वेदनीय के हैं दो भेद।
होय कभी उत्साह जीव को,कभी प्राप्त होता है खेद।।
वेदनीय के नशते अव्यावाध सुगुण का होय प्रकाश।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके,होवे मन की पूरी आस।।5।।

ॐ ह्रीं साता वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम वेदनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(आयु कर्म)

आयुकर्म के भेद चार हैं,नरक-पशु-नर-देव विशेष।
रोके निश्चित काल जीव को,निज आयू पर्यन्त अशेष।।
आयु कर्म का नाश किए जिन,अवगाहन गुण में हो वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके,होवे मन की पूरी आस।।6।।

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं तिर्यंच आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री नरक आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं देव आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि.स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम आयुकर्म निवारणाय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(नाम कर्म)

रही प्रकृतियाँ नाम कर्म की,जैन धर्म आगम अनुसार।
पिण्ड रूप अठट्ाइस हैं चौदह, अपिण्ड प्रकृति के रहे प्रकार।।
नाम कर्म का नाश किए फिर, गुण सूक्ष्मत्व में होवे वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।7।।

ॐ ह्रीं नामकर्म अष्टविंशति अपिण्ड प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् निर्वपामीति स्वाहा। ॐ ह्रीं नामकर्म नामा चतुर्दश पिण्ड प्रकृति मध्य पंचषष्ठी प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम नामकर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गोत्र कर्म)

उच्च - नीच दो गोत्र कर्म के,भेद बताए हैं तीर्थेश।
इनका नाश करे जो प्राणी,अगुरुलघु गुण पाए विशेष।।
शिवपथ का राही बन जाए,नही रहे कर्मों का दास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके,होवे मन की पूरी आस।।8।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम गोत्र कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्णार्घ

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय,अन्तराय है कर्म विशेष।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय,कर्म नाशते सिद्ध अशेष।।
अष्ट कर्म के नशते प्राणी,करते है शिवपुर में वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके,होवे मन की पूरी आस।।9।।

ॐ ह्रीं श्री घातिकर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अघातिकर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपम् नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अष्टकर्म दहनाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जाप्य- ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः।

जयमाला

दोहा- कर्म दहन पूजा करें, करने कर्म विनाश।
जयमाला गाते विशद,हो शिवपुर में वास।।

(शम्भू छन्द)

गुण गाने को सिद्ध प्रभू के,अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी,सिद्धों के पद में वन्दन।।

काल अनादी से कर्मों ने,हमको बहुत सताया है।
चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है।।1।।
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय,अन्तराय की तुम जानो।
त्रिंशत कोड़ा-कोड़ा सागर,स्थिति भाई पहिचानो।।
नीच गोत्र की बीस-बीस है,मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की,जानो यह उत्कृष्ट प्रधान।।2।।
वेदनीय बारह मुहूर्त्त की,नाम गोत्र की जानो आठ।
अन्तर्मुहूर्त शेष कर्मों की,स्थिति का आता है पाठ।।
मध्यम के हैं भेद अनेकों,जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे,नहीं हुआ आतम कल्याण।।3।।
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को,सुख अनन्त पाए भगवान।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर,प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा,केवल दर्शन जगा महान।।4।।
अन्तराय का अन्त किए जिन,वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने,निज आतम में वास किया।।
इन्दों द्वारा रचना होती,समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते,प्राणी चरणों बारम्बार।।5।।
आयु कर्म के साथ नाम अरु,गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी,करते हैं चेतन में वास।।
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर,पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन,करके पाते हैं आह्लाद।।6।।
अन्तिम देह त्याग कर अपनी,क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभू विराजे,अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध।।
भाव बनाकर आये हैं हम,तव पद को पाने हे नाथ!
'विशद' भाव से वन्दन करते,चरणों झुका रहे हम माथ।।7।।

(छन्दः घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय-जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु -लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- **अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।**
अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन्!, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन्! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु! अन्तर तम साफ करो,हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभो! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मैटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

।। शांतये शांति धारा।।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धी पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय हैं ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा- **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
'विशद' भाव से कर रहे, शत्-शत्बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन

स्थापना

दोहा– **ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।**
विशद हृदय में आज हम, करते हैं, आह्वान्॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम ताप नशाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम अक्षत नाथ चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

संज्ञा अहार विनशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **पद तीर्थंकर का प्रभू, पाए मंगलकार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार॥

(चौपाई)

आदिनाथ आदी में आए, अजित नाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी॥
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभू जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा सम गाए॥1॥
सुविधिनाथ है जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए॥
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी॥2॥
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए॥
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता॥3॥

चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।4।।
द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिव पद हमको भी मिल जाए।।5।।

दोहा- **शिव पद के धारी हुए, तीर्थंकर चौबीस।**
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ।**
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

भजन श्री आदिनाथ जी का

सपने में रात मेरे आए, ओ.....।
मेरे बाबा अदिनाथ जगत के रखवाले।। टेक।।

जब रात को सोने जाते, श्री आदिनाथ को ध्याते।
जब भोर भये उठ जाते, प्रभु तुमरे दर्शन पाते।।
प्रभु धर्म प्रवर्तक गाये, ओ मेरे....।।1।।

जो द्वार पे तेरे आते, चरणों में शीश झुकाते।
जो पूजा आरती गाते, वे मन वांछित फल पाते।।
हम भक्त शरण में आए, ओ मेरे..।।2।।

प्रभु चरण शरण को पाएँ, तुमको निज हृदय बसाएँ।
प्रभु तुमरी महिमा गाएँ, अपना कर्त्तव्य निभाएँ।।
हम दर्शन कर हर्षाए, ओ मेरे....।।3।।

हे आदिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
हे विशद मोक्ष पथ गामी, चरणों करते प्रणमामी।।
तुम चरणा हृदय बसाए, ओ मेरे...।।4।।

टोंक नसिया में विराजित अतिशयकारी भूगर्भ से प्रगटित शांतिदायक

श्री आदिनाथ भगवान की पूजा

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, इस जग में गाई जाती है।
सारी जगती जिनके चरणों, नत होके शीश झुकाती है।।
चरण छतरी नशियाँ में प्रगटे, भूगर्भ से आदिनाथ स्वामी।
हम हृदय कमल में आह्वानन, कर चरणों करते प्रणमामी।।

दोहा- **आओ तिष्ठो मम् हृदय, आदिनाथ भगवान।**
कृपा करो इस भक्त पर, हे प्रभु! कृपा निधान।।

ॐ ह्रीं टोंक नसिया स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं टोंक नसिया स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं टोंक नसिया स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

हम प्रासुक करके जल निर्मल, प्रभु चरण चढ़ाने लाए हैं।
अब जन्म जरादिक रोगों से, छुटकारा पाने आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शीतल चंदन घिस करके, हे नाथ! चढ़ाने लाए हैं।
भव का संताप नशाने को, तव चरणों में हम आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षय अक्षत हैं अनुपम, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
जो है अखण्ड अविनाशी पद, वह पद पाने आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह भाँति-भाँति के मनहारी, शुभ पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम काम वाण की बाधा को, प्रभु पूर्ण नशाने आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाकर के मनहर, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह घृत का दीप बनाकर के, प्रभु यहाँ जलाकर लाए हैं।
छाया अंतर में घोर तिमिर, हम उसे नशाने आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप बनाकर के ताजी, प्रभु यहाँ जलाने लाए हैं।
हो कर्म नष्ट अब अष्ट मेरे, हम भक्ती करने आए हैं।।

हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस पक्व फल लिए नाथ!, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
है मोक्ष महाफल सर्वोत्तम, वह फल पाने को आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट गुणों की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
प्रभु भव बंधन से छूट सकें, अतएव शरण में आए हैं।।
हम नसिया जी के बड़े बाबा, श्री आदि प्रभु को ध्याते हैं।
अब मेरे सारे कष्ट हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं टोंक नसियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांती का दरिया बहे, नाथ! आपके द्वार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा -पुष्पांजलि कर पूजते, तव चरणों को आज।
कृपा करो निज भक्त पर, तारण तरण जहाज।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

अषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं अषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्म कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तारण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैत वदी नौमी को शुभकार, प्रभू ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तारण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन वदी एकादशी सु जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तारण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण एकादश्यां केवलज्ञान प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाश गिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तारण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **प्रकट हुए भू गर्भ से, आदिनाथ भगवान।**
जयमाला गाके विशद, करते हैं गुणगान।।

(ताटंक छंद)

दिनकर सम विलसित होता, है रूप स्वर्ण सा आभावान।
जिनके सुख से गुंजित होता, आतम जागृति का अभिमान।।
नभ में फैल रहे हैं जिनके, ॐकारमय दिव्य वचन।
प्रभो! आपका दर्श मिले, हे आदि जिनेश्वर तुम्हे नमन।।1।।
चये आप सर्वार्थ सिद्धि से, भारत भू पर चमन खिला।
भवि जीवों को मुक्ती पथ पर, बढ़ने का आधार मिला।।
नगर अयोध्या के कानन में, आई अनुपम तरुणाई।
नाभिराय मरुदेवी के गृह, घड़ी हर्ष की शुभ आई।।2।।
चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु जी, इस वसुधा पर उदित हुए।
जन–गण मन हर्षित था सारा, सूर्य चाँद भी मुदित हुए।।
नीलपरी की मृत्यू लखकर, भव बन्धन से भीत हुए।
रीत प्रीत मद मोह जीतकर, परम दिगम्बर मीत हुए।।3।।

सहन किए उपसर्ग परीषह, पंचेन्द्रिय का दमन किए।
ज्ञान ध्यान तप साधन पाकर, चेतन रस में रमन किए।।
आत्म क्रान्ति की भीषण गर्जन, से कर्मों की राशि गली।
कर्म घातिया के नशते ही, निज दीपक में ज्योति जली।।4।।
विशद ज्ञान के सागर से फिर, जिन सलिला का सलिल बहा।
इस जगती के भवि जीवों ने, अवगाहन तव किया अहा।।
शिखर शैल कैलाश धन्य है, किए आप भव दुखदा हन्त।
सिद्धशिला शिव धाम के राही, पाए विशद स्वरूप अनन्त।।5।।
हृदय स्थल है भारत भू का, आलोकित है राजस्थान।
टोंक जिला की आभा स्वप्निल, नशियाँ है अनुपम स्थान।।
परम रत्न गर्भा शृंगारित, निज गरिमा से आभावान।
धवल सौम्य छवि निर्विकार प्रभु, प्रगटे आदीश्वर भगवान।।6।।

दोहा- **भादव शुक्ल त्रयोदशी, दो हजार दश जान।**
विक्रम संवत् जानिए, प्रकट हुए भगवान।।

ॐ ह्रीं टोंक नशियाँ स्थित सर्व संकट हारी, ऋद्धी-सिद्धि प्रदायक बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **प्रातः होते आपकी, होती जय जयकार।**
भक्त चरण की अर्चना, करते मंगलकार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भूगर्भ स्थित प्रतिमाओं का उद्भव स्थल

चरण छतरी का अर्घ्य

भादव शुक्ल त्रयोदशि पावन, सन् उन्नीस सौ त्रेपन जान।
आदिनाथ प्रभु प्रगट हुए हैं, नशिया छतरी के स्थान।।
धवल चरण की करे वन्दना, भक्ति भाव से सकल समाज।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते हम भी आज।।

ॐ ह्रीं टोंक नगरे चरण छतरी स्थित श्री आदिनाथ चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री आदिनाथ पूजन (पुरानी टोंक)

स्थापना

षट कर्मों के जो उपदेशक, धर्म प्रर्वतक हुए महान ।
नाभिराय मरुदेवि के नन्दन, लोक पूज्य स्वर्णाभावान ।।
नगर अयोध्या में जन्मे प्रभू, तीर्थंकर श्री आदि जिनेश ।
चरण कमल की अर्चा करते, सुर नर मुनि जग के अवशेष।।

दोहा- **टोंक पुरानी के प्रभू, आदिनाथ भगवान ।**
अर्चा करने आपकी, करते हैं आह्वान ।।

ॐ ह्रीं पुरानी टोंक स्थित सर्व मंगलकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं पुरानी टोंक स्थित सर्व मंगलकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं पुरानी टोंक स्थित सर्व मंगलकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइता छन्द)

गंगा का नीर भराए, जिन अर्चा करने लाए ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

चन्दन में केसर गारी, हम चढ़ा रहे मनहारी ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि.स्वाहा।

मोती सम अक्षत लाए, हम अर्चा कर हर्षाए ।
हम अदिनाथ को ध्याते ,पद सादर शीश झुकाते ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

हैं पुष्प ये खुशबू कारी, जो काम रोग परिहारी ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

चरु सरस चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवैद्यं नि.स्वाहा।

यह दीप तिमिर के नाशी, हैं सम्यक् ज्ञान प्रकाशी।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

फल मोक्ष महाफल दायी, यह चढ़ा रहे हम भाई।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.स्वाहा ।

यह अर्घ्य है मोक्ष प्रदायी, से पूजा आन रचाई ।
हम अदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **शांतिधारा से विशद, होवे शांति अनूप ।**
जिन अर्चा करके मिले, निज का निज स्वरूप।।

।।शांतये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्पांजलि करके जगे, मन में हर्ष अपार ।**
विशद भाव पाके करें, भव सिन्धू से पार ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

दोहा- **द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान ।**
सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण ।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

चैत कृष्ण नौमी प्रभू, पाए जन्म कल्याण ।
शत इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान ।। 2।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग्य ।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग ।।3।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण नवम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान ।
फाल्गुन वदि एकादशी, जग में हुई महान ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण नवम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हें कर्म विनाश ।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास ।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण नवम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **महिमा गाने आपकी, भक्त हुए वाचाल ।**
विशद भाव से गा रहे ,आज यहाँ जयमाल ।।

।। पद्धरि छन्द ।।

जय भोग भूमि का अंत पाए, जय ऋषभ देव अवतार आय ।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाए ।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान ।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय ।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभ नाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन- जनसे जिनको रहा नेह।।3।।

लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षटकर्म की शिक्षा दिए मान ।
नीलांजना की मृत्यु का योग, पाके छोड़े संसार भोग ।।4।।
तब नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार ।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान ।।5।।
फिर ' विशद 'कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास ।
अष्टापद गाया मोक्ष थान, जो सिद्ध क्षेत्र गाया महान ।।6।।

दोहा- **पुण्य पाप तज के प्रभू, किए आत्म का ध्यान ।**
मोक्ष महल में जा बसे, आदिनाथ भगवान ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **करें वन्दना इन्द्र सौ, चरणों की भगवान ।**
मौका हमको भी मिले, जागे भाव महान ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ भगवान पूजन (मालपुरा)

स्थापना

जिनके यश की गरिमा गाके, चक्री सुरेन्द्र सब हारे हैं ।
सौ इन्द्र चरण में झुकते हैं, ऐसे तीर्थेश हमारे हैं।।
श्री आदिनाथ जी मालपुरा, में अतिशय कई दिखाए हैं ।
जिनकी अर्चा को आह्वानन्, करने हम चरणों आए हैं।।

दोहा- **आओ तिष्ठो मम् हृदय, आदिनाथ भगवान ।**
शीश झुकाते तव चरण, करते हें गुणगान ।।

ॐ ह्रीं मालपुरा स्थित अतिशयकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं मालपुरा स्थित अतिशयकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं मालपुरा स्थित अतिशयकारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ भव- भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छन्द)

जिन वचनामृत सम शीतल जल, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं ।
प्रभु जन्म जरा मृत्यु का हम भी, रोग नशाने आए हैं ।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा ।

श्रेष्ठ सुगंधित शीतल चंदन, हम घिसकर के लाए हैं ।
भव संताप मिटाकर अपना, शिवपद पाने आए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा ।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षय, पद पाने हम आए हैं ।
मिथ्यामल हो नाश हमारा, पुंज चढ़ाने लाए हैं ।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि.स्वाहा ।

पुष्प सुगंधित निज खुशबू से, चतुर्दिशा महकाए हैं।
विषय वासनानाश हेतु हम, अर्पित करने लाए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा ।

नाश किए जिन क्षुधा रोग का, अर्हत् पदवी पाए हैं।
यह नैवेद्य चढ़ाकर हम भी, वह पद पाने आए हैं।।

हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा ।

मोह अंध का नाश किए जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं ।
अन्तरज्ञान की ज्योति जलाने, दीप जलाकर लाए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा ।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, सिद्ध सुपद को पाए हैं ।
आठों कर्मनाश हों मेरे, धूप जलाने आए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

मोक्ष महाफल अनुपम अक्षय, हम पाने को आए हैं।
श्रेष्ठ सरस फल लिए थाल में, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि.स्वाहा ।

अष्टम वसुधा पाने को हम, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
लाख चौरासी भ्रमण नाशकर, शिव सुख पाने आए हैं।।
हम मालपुरा के काले बाबा, आदि प्रभु को ध्याते हैं ।
मम मनोकामना पूर्ण करो, हम सादर शीश झुकाते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

अषाढ़ वदि द्वितिया को भगवान, प्रभू जी पाए गर्भ कल्याण।
चरण में वन्दन आदि जिनेश, करें सब भक्त यहाँ अवशेष ।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितियां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

चैत वदि नौमी रही महान, प्राप्त शुभ किए जन्म कल्याण
चरण में वन्दन आदि जिनेश, करें सब भक्त यहाँ अवशेष ।।2।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

चैत वदि नौमी अतिशयकार, प्रभू ने संयम लीन्हा धार ।
चरण में वन्दन आदि जिनेश, करें सब भक्त यहाँ अवशेष ।।3।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्णनवम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशि मान, प्रभू जी पाए केवल ज्ञान ।
चरण में वन्दन आदि जिनेश, करें सब भक्त यहाँ अवशेष ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण एकादशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

माघ वदी चौदश को भगवान, पाए अष्टापद से निर्वाण ।
चरण में वन्दन आदि जिनेश, करें सब भक्त यहाँ अवशेष ।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **मालपुरा के आदि जिन, करते मालामाल ।**
जिनके चरणों में विशद, गाते हैं जयमाल ।।

।।वेसरी छन्द।।

मध्यलोक के मध्य में जानो, जम्बूद्वीप श्रेष्ठ पहचानो।
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया, आर्य खण्ड पावन बतलाया।।

भारत देश श्रेष्ठ शुभकारी, राजस्थान की महिमा न्यारी।
टोंक जिला जिसमें है भाई, मालपुरा तहसील बताई ।।
आदिनाथ का मंदिर जानो, अति प्राचीन रहा यह मानो।
तीन देवरिया मंदिर गाया, अतिशयकारी जो बतलाया ।।
आदिनाथ की प्रतिमा प्यारी, सोहे जो अनुपम मनहारी।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, मंत्र मुग्ध सा वह हो जाए ।।
देव यहाँ अर्चा को आते, ऐसा यहाँ पे लोग बताते ।
अखण्ड दीप की महिमा न्यारी, यहाँ बताते हैं नरनारी ।।
घृत के गँज हैं महिमाशाली, कभी नहीं जो होते खाली ।
प्रभु के दर पे जो भी आते, खाली हाथ कभी ना जाते।।
श्रद्धा से जो शीश झुकाए, इच्छा पूरी करके जाए ।
न्हवन करे जो प्रभु का भाई, उसकी फैले जग प्रभुताई ।।
गंधोदक जो माथ लगाए, वह अपना सौभाग्य जगाए ।
रोगी अपना रोग नशाए, अज्ञानी सद् ज्ञान जगाए ।।
निर्धन दर पे पुण्य बढ़ावे, जिससे धन संपत्ती पावे ।
पुत्रहीन सुत गोद खिलावे, दीन हीन सौभाग्य जगावे ।।
प्रभु के दर का बने पुजारी, हो जावे वह वैभवशाली ।

दोहा- **आदिनाथ भगवान का, जपे निरंतर नाम ।**
बन जाते है शीघ्र ही, उनके बिगड़े काम ।।

ॐ ह्रीं मालपुरा तीन देवरिया जिनालय स्थित सर्व संकट हारी मम् मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **कर्म घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान ।**
धर्म प्रवर्तक आदि जिन, करते हम गुणगान ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाजंलि क्षिपेत ।।

आदिनाथ भगवान की पूजा (सांगानेर)

स्थापना

धर्म प्रर्वतक ऋषभ देव जी,षट् कर्मों का दीन्हे ज्ञान ।
अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, परम दिगम्बर जिन भगवान।।
सांगानेर में आदिनाथ की, प्रतिमा अतिशयकारी है।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, पावन मंगलकारी है।।

दोहा- **पूजा करते भाव से, दीप धूप के साथ ।**
दुख दारिद्र विनाश कर, बने श्री के नाथ।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर।।1।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्र जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा ।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।2।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा ।

चढ़ाते अक्षत आभावान, प्राप्त हो अक्षत सुपद महान ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।3।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्व. स्वाहा ।

पुष्प से आए परम सुवास, काम रुज का हो जाए नाश ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।4।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा ।

सुचरु यह लाए हम रसदार, क्षुधा रुज का होवे संहार ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।।5।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवद्यं निर्व. स्वाहा ।

दीप यह घृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।।6।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा ।

अग्नि में खेने लाए धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।।7।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा ।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महति महान।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।।8।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्व. स्वाहा ।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाकर पाएँ सुपद अनर्घ्य ।
ऋषभ जिन राजे सांगानेर, मिटे अर्चा कर भव का फेर ।।9।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दोहा- **शांती पाने के लिए, देते शांती धार ।**
ऋषभदेव जिन के चरण, अतिशय बारम्बार ।।

।।शान्तये शांति धारा।।

दोहा- **पुष्पांजलि करते प्रभो!, पाने पुष्प पराग ।**
रत्नत्रय विधि प्राप्त हो, बुझे राग की आग ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

द्वितीया रही अषाढ़ की, पाए गर्भ कल्याण।
शिवपथ के राही बने आदिनाथ भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितियां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैतवदी नौमी प्रभो! पाए जन्म कल्याण।
शिवपथ के राही बने आदिनाथ भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत कृष्ण नौमी तिथी, पाए तप कल्याण।
शिवपथ के राही बने आदिनाथ भगवान।।3।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण नवम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि फाल्गुन एकदशी, विशद जगाए ज्ञान।
शिवपथ के राही बने आदिनाथ भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण एकादशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

माघ वदी चौदश प्रभो!, पाए पद निर्वाण।
शिवपथ के राही बने आदिनाथ भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

आदिनाथ स्वामी का विशेष अर्घ्य

सुदि वैसाख तीज सांगावती में उत्सव सुर किये विशेष।
संवत सप्त शतक को आये, गजारूढ़ हो आदि जिनेश।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा जग में, आदि व्याधि नाशन कारी।
सुख शान्ति सौभाग्य प्रदायक, विशद कहे मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **बाबा सांगानेर के, आदिनाथ भगवान ।**
जयमाला गाते विशद, करते हम गुणगान ।।

। पद्धरि छन्द ।।

जय ऋषभ देव ऋषिगण नमन्त, जय मुक्ति वधु के बने कंत ।
जय नगर अयोध्या जन्म लीन, जो मात पिता भू धन्य कीन ।।
लख आयु तिरासी पूर्व जान, गृह वासी होके किए ध्यान ।
प्रभु राज्य प्राप्तकर मण्डलीक, षट्कर्म सिखाए शोभनीक।।
फिर नीलांजना की मृत्यु जान, संयम धर कीन्हें आप ध्यान ।
प्रभु सहस्र वर्ष तप किए घोर, फिर मोक्ष महल की बढ़े ओर ।।
जिन अष्टापद से कर्म नाश, जा सिद्धशिला पर पाए वास ।
जयपुर में सांगानेर जान, है तीर्थ क्षेत्र की अलग शान ।।
थे सप्त शतक जैनी विशेष, जो वैभवशाली थे अशेष ।
राजा ने ईर्ष्याभाव धार, जैनों की कर दी लूट मार ।।
फिर मंदिर करने को विनाश,राजा आया कई लिए दास ।
देवाशन तब कम्पायमान, हो गये लगाए अवधि ज्ञान ।।
सेना को कीलित किए देव, तव क्षमा भूप मांगी सुएव ।
तब मुक्त हुई सेना तमाम, प्रभु चरणों में कीन्हें प्रणाम ।।
फिर सम्वत सोलह सौ करीब, था भक्त भूप सांगा अतीव ।
जो श्री फल चाँदी का महान, जिन चरणों अर्पित करे आन ।।
संग्राम पुरी का बदल नाम, जो सांगापति बतलाए धाम ।
अब सांगानेर कहाए मान, है कलापूर्ण जिनगृह सुजान ।।
है सदी आठवी का विशेष, जिन गृह में आदीश्वर जिनेश ।
शुभ सम्वत् सप्त शतक महान, संघी जी प्रतिमा लाए जान ।।

दोहा- **जिन पूजा चिंतामणी, चिन्तित फल दातार।**
सुख शांती सौभाग्य शुभ, होय आत्म उद्धार ।।

ॐ ह्रीं सांगानेर स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **भक्त शरण में हे प्रभो!, करते हैं अरदास।**
भाते हैं यह भावना , विशद पूर्ण हो आश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पदमप्रभु जिन पूजा (बाड़ा पदमपुरा)

स्थापना

जिनका यश गूँज रहा पावन, धरती से गगन सितारों तक ।
जिनकी पूजा अर्चा होती, नर लोक स्वर्ग के तारों तक ।।
जो प्रगट हुए हैं बाड़ा में, बाड़ा को चमन बनाया है।
इस भारत भू का हर प्राणी, जिनके चरणों में आया है ।।
जिनके चरणों में भूत-प्रेत, लोगों के संकट कट जाते ।
श्री पद्म प्रभू का आह्वानन्, करके चरणों में सिर नाते ।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ! अत्र तिष्ठ- तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, त्रय रोग नशाने आए ।
हम पद्मप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।1।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा ।

केशर की गंध बनाए, भव ताप नशाने आए ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते , पद सादर शीश झुकाते ।।2।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।3।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा ।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, मम् काम रोग नश जाए ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते , पद सादर शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा ।

चरु चढ़ा रहे मनहारी, हैं क्षुधारोग परिहारी ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्दांय क्षुधारोग विनाशनाय नैवद्यं निर्व. स्वाहा ।

दीपक ये ज्ञान प्रकाशी, प्रभु चढ़ा रहे तम नाशी ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते , पद सादर शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों की फौज हटाएँ ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते , पद सादर शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा ।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा ।

यह अर्घ्यं चढ़ाते भाई, जो है अनर्घ्य पद दायी ।
हम पद्म प्रभु को ध्याते , पद सादर शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं बाड़ा पद्मपुरा स्थित सर्व संकटहारी मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दोहा- **शांती धारा जो करें, वे पावें सद्ज्ञान ।**
शिवपद के राही बनें, करें आत्म कल्याण ।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्प चढ़ाते आज हम , पुष्पित मंगलकार ।**
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टि करवाए ।
माघ कृष्ण की षष्ठी गाई, उत्सव देव किए तब भाई ।।1।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण षष्ठम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर-नर इन्द सभी हर्षाए ।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए ।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यांजन्म कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी ।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए ।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां तप कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए ।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई ।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्थ्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त बाड़ा के श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

भूमि स्थितसमय का अर्घ्य

पाँचें सुदि वैशाख में, प्रगटे पदम जिनेश ।
जिनकी अर्चा हम विशद, करते यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं वैशाख सुदी पंचम्यां बाड़ा पदमपुरा स्थाने प्रकट रूपाय श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

चरण चिन्ह का अर्घ्य

प्रगट हुए पद्म प्रभु, भू में जिस स्थान ।
चरण चिन्ह की वन्दना, करते यहाँ महान ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **पद्मासन पद में पद्म, पद्मप्रभु भगवान ।**
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान ।।

।। रेखता छन्द।।

चरण में भक्ती से शत इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश ।
कहाए पद्म प्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश ।।
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन ।
धरण नृप रही सुसीमा माता, गर्भ में कीन्हें आप प्रयाण ।।
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम ।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हें सभी प्रणाम ।।
जगा प्रभु के मन वैराग्य, सकल संयम धर हुए मुनीश ।
ऋद्धियाँ प्रगटीं अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष ।।
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान ।
रचाए समवशरण तव देव, रहा विधि का कुछ यही विधान ।।
पूर्णकर आयु कर्म विशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश ।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हें आप निवास ।।
ग्राम बाड़ा में मूला जाट, नींव घर की खोदी मनहार ।
भूमि से प्रगटे पद्म जिनेश, हुई तव भारी जय- जयकार ।।

शरण में आए जो भी भक्त, हुई उन सबकी पूरी आस ।
वन्दना करते चरणों नाथ!, पूर्ण हो मेरी भी अरदास ।।

दोहा- **प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान ।**
गुण गाते निज भाव से,, मिले मुक्ति का यान ।।

ॐ ह्रीं श्री बाड़ा ग्रामे मनोज्ञ मनोवांछित फलप्रदाता श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

दोहा- **पद्मप्रभु भगवान हैं, वांछित फल दातार।**
वंदन करते भाव से, पद में बारम्बार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजा (मैंदवास)

स्थापना

पूर्ण चन्द्रमा से भी अनुपम, चन्द्रप्रभु हैं आभावान ।
अर्ध चन्द लक्षण है पावन, धवल रंग पाए भगवान ।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रगटे चन्द्रप्रभू भगवान ।
विशद हृदय के सिंहासन पर, जिनका हम करते आह्वान।।

दोहा- **महासेन के लाड़ले, लक्ष्मणा के सुकुमार ।**
चन्द्रपुरी में जन्म से, हुआ है मंगलाचार ।।

ॐ ह्रीं मैंदवास स्थित मम् मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् । ॐ ह्रीं मैंदवास स्थित मम् मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं मैंदवास स्थितमम् मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(तर्ज : बाबुल की दुआएं)

भव वन में भटक रहे स्वामी, भर सकी ना तृष्णा की खाई ।
भव सिन्धू गहरा है अतिशय, सुख की इक बूँद ना मिल पाई।।

हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं ।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव का अभाव अब हो मेरा, यह भाव बनाकर आए हैं।
चन्दन सम शीतलता पाने, यह शीतल चन्दन लाए हैं।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं ।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुमने कर्मों पर जय पाकर, यह जीवन सफल बनाया है।
वह शाश्वत अक्षय पद पाने, का भाव हृदय में आया है।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं ।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पुष्प लिए दश धर्मों के, जिससे जीवन यह महकाए।
श्रद्धा से आज चढ़ाने को, हे नाथ! शरण में हम आए ।।
हम मैंदवास के चन्दप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, तुमने प्रभु क्षुधा मिटा डाली।
चेतन की आलौकिक शक्ती, निज के अन्दर में प्रगटा ली।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग तमहारी जड़ रत्नों के, हम अनुपम दीपक लाते हैं।
रत्नत्रय दीपक से स्वामी, निज आतम दीप जलाते हैं।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो तप के दावानल द्वारा, कर्मों की धूप जलाते हैं।
वे शिव पथ के राही बनते, अरु सिद्ध शिला पर जाते हैं।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं ।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे महातपस्वी ज्ञानमूर्ति, तुम निज में समता प्रगटाए।
हम भौतिक चाह विसर्जित कर, फल शिव पथ का पाने आए ।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं ।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपसर्ग जयी समता मूर्ति, हे ज्ञान सुधारस के दाता।
हम पद अनर्घ्य पाने स्वामी, यह अर्घ्य चढ़ाते जग त्राता।।
हम मैंदवास के चन्द्रप्रभु, की पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चले आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- **भव दुख शांति हेतु हम, देते शांतीधार।**
राह दिखाओ मोक्ष की, करो एक उपकार ।।

।।शान्तये -शांतिधारा।।

दोहा- **समता मय जीवन बने, जागे हृदय विवेक ।**
पुष्पांजलि करते विशद, लेकर पुष्प अनेक।।

।। दिव्य पुष्पपंजलि क्षिपेत।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

शम्भू छन्द

माह चैत्र के कृष्ण पक्ष की, तिथि पंचमी रही महान ।
चय कीन्हे प्रभु स्वर्ग लोक से, पाए आप गर्भ कल्याण ।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभु का जय-जयकार ।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष माह के कृष्ण पक्ष की, एकादशी है सुखकारी ।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी ।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभु का जय-जयकार ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष माह के कृष्ण पक्ष की, एकादशि शुभ रही महान ।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुआ आपका तप कल्याण ।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभु का जय-जयकार ।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष माह के कृष्ण पक्ष की, हुई सप्तमी महिमावान ।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवलज्ञान ।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभु का जय-जयकार ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन माह में शुक्ल पक्ष की, रही सप्तमी शुभकारी ।
गिरि सम्मेद के ललित कूट से, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार ।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, चन्द्रप्रभु का जय-जयकार ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **जगतीपति जगदीश हे, जग जन के प्रतिपाल।**
चन्द्रप्रभु की आज हम, गाते हैं जयमाल ।।

ज्ञानोदय छन्द

जिनका यश गौरव गूँज रहा, जगती से विशद सितारों तक।
जिनके द्वारा मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक ।।
जिनकी महिमा को लखकर, सौधर्म इन्द्र भी शर्माया ।
जिनके अनन्त गुण को गाकर, नत होकर चरणों में आया ।।
शुभ वैजयन्त से चयकर के प्रभु, चन्द्र पुरी में जन्म लिए ।
माता सुलक्षणा महासेन, राजा को आके धन्य किए ।।
शुभ चैत्य कृष्ण की पांचें को, अवतरण आपने पाया था ।
फिर पौष कृष्ण ग्यारस आई, जब जन्म का अवसर आया था ।।
दश लाख पूर्व की आयू शुभ, थी धनुष डेढ़ सौ ऊँचाई ।
था अर्ध चन्द्र दाएँ पग में, शुभ धवल रंग तन का भाई ।।

शुभ पौष कृष्ण एकादशि को, जब तड़ित चमकता देख लिया ।
सर्वार्थ नाग तरु तल जाके, संयम धर सब कुछ त्याग दिया ।।
फाल्गुन वदि सातै को प्रभु ने, केवल ज्ञान जगाया था।
फिर फाल्गुन सुदि सातें के दिन, निर्वाण सुपद को पाया था ।।
है राजस्थान में टोंक जिला, मैंदवास पास इक ग्राम रहा ।
उस गांव मे दुर्गालाल नाथ, को सपना आया श्रेष्ठ अहा ।।
इक मूर्ति दबी है भूमी में, उसको तुम खोद निकालो अब।
कृष्णा आसौज छठवी तिथि थी, श्री चन्द्र प्रभु प्रगटाए जब ।।
जिन पूजाभिषेक चालीसा जो, आरतियां भाव से गाते हैं।
वे रोग शोक संकट हरके, अपना सौभाग्य जगाते हैं।।

दोहा- **चन्द्रप्रभु के चरण की, भक्ति करें जो लोग ।**
आधि व्याधि को मैटकर, पावें शिव पद भोग ।

ॐ ह्री मैंदवास जिनालय स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मेन्दवास के चन्द्रप्रभू, गाए अतिशयकार ।**
जिनकी अर्चा कर 'विशद', मिले मोक्ष का द्वार ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

उद्भव तिथि स्थल चरणों का अर्घ्य

आसौज कृष्ण छठवी दिन गाया, सन् उन्नीस सौ इक्यासी।
प्रगट हुए चन्द्रप्रभु स्वामी, गुण अनन्त की प्रभु रासी।।
धवल मनोहर सौम्य सुछवि है, चन्द्र प्रभु शुभ लक्षणवान।
'विशद 'भाव से अर्चा करके, चरणों करते मंगलगान ।।

ॐ ह्रीं आसौज कृष्णा षष्ठी दिने भूगर्भेप्रकट श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन (काफला टोंक)

स्थापना

टोंक नगर में काफला, की है अनुपम शान ।
जिन मंदिर में चन्द्रप्रभु, मूल नायक भगवान ।।
जिनकी पूजा से कटें,जन्म जन्म के पाप ।
आह्वानन करके हृदय, करते हैं हम जाप ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

(सखी छन्द)

जल की शुभ धार कराएँ, त्रय रोग नाश हो जाएँ ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व .स्वाहा।

जिन चरणों गंध चढ़ाएँ, भव ताप से मुक्ती पाएँ ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ्र जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्व .स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, भव रोग नाश हो जाए।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंनाय पुष्पं विनाशनायं निर्व .स्वाहा।

चरु से हम पूज रचाएँ, अब क्षुधा से मुक्ती पाएँ ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व .स्वाहा।

अर्चा को दीप जलाए, मम मोह तिमिर नश जाए ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व .स्वाहा।

यह धूप जला हर्षाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा ।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पद दायी ।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्व .स्वाहा ।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(त्रोटक छन्द)

जय जिनेन्द्र श्री चन्द नमस्ते, पूजित शत-शत इन्द्र नमस्ते।
चिदानंद चिद्रूप नमस्ते, ज्ञायक निजस्वरूप नमस्ते ।।
निराकार निर्वाण नमस्ते, धारी केवल ज्ञान नमस्ते ।
परम पूज्य अविकार नमस्ते, मुक्ति वधु के हार नमस्ते।।
ज्ञान ध्यान तप रूप नमस्ते, स्वयं बुद्ध शुचि रूप नमस्ते।
स्वर्ग से किए प्रयाण नमस्ते, चन्द्रपुरी में आन नमस्ते ।।
पाए गर्भ कल्याण नमस्ते, जन्म लिए भगवान नमस्ते ।
राग द्वेष मद ध्वान्त नमस्ते, अतिशय मुद्रा शांत नमस्ते ।।
पाए तप कल्याण नमस्ते, पंच महाव्रत वान नमस्ते ।
करके शुक्ल ध्यान नमस्ते, पाएँ केवल ज्ञान नमस्ते ।।
समवशरण शुभकार नमस्ते, दिव्य ध्वनि ॐकार नमस्ते।
तीन गति के जीव नमस्ते, पाए पुण्य अतीव नमस्ते ।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान नमस्ते, पाए मोक्ष कल्याण नमस्ते ।
तीर्थराज सम्मेद नमस्ते, करके योग निरोध नमस्ते ।।
ललित कूट शुभकार नमस्ते, किए कर्म सब क्षार नमस्ते।
धीर वीर गंभीर नमस्ते, पाए भव का तीर नमस्ते ।।

प्रभो! भवोदधि तार नमस्ते, सर्व दोष निरवार नमस्ते ।
ऋद्धि सिद्धि साकार नमस्ते, सुखकारी दुखहार नमस्ते।।
शरणागत प्रतिपाल नमस्ते, पूज्य आप त्रिकाल नमस्ते ।
रोग शोक परिहार नमस्ते, शुद्धि बुद्धि दातार नमस्ते ।।

दोहा- **शिव दर्शायक आप हो, क्षायक सम्यकज्ञान ।**
चन्द्रप्रभू हम आपका, करते हैं गुणगान ।।

ॐ ह्रीं काफला जिनालय स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- **आप हमारे देवता, मात पिता तीर्थेश ।**
'विशद' भाव से आपको, ध्याते यहाँ विशेष।।

।।इत्याशीर्वाद:पुष्पपांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन (देहरा तिजारा)

स्थापना

श्री चन्दप्रभु का यश गौरव, खुश हो देवों ने गाया है।
आकाश स्वर्ग में भी जिनका, सौरभ पावनतम छाया है।।
जिनके दर्शन करके प्राणी, अपने निज भाग्य सजाते हैं।
जिनकी अर्चा करके पावन, नर भाग्यवान हो जाते हैं।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, अरदास लिए हम आए है।
पुष्पित यह पुष्प मनोहर शुभ, आह्वानन् करने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

श्रद्धा जल का सुधा कलश प्रभु, तुम चरणों में ढारेंगे।
जन्म मरण रोगों का बोझा, आकर यहाँ उतारेंगे।।

देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तत्त्व की गहन पिपासा, मेरे अन्दर जागी है।
भव सन्ताप नाश करने की, लगन हृदय में लागी है।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनाशी अक्षय अखण्ड पद, हम भी अब प्रगटायेंगे।
अक्षय पद जब तक ना पाया, द्वारा आपके आएँगे।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल किसलय महा मनोहर, ऐसे पुष्प चढ़ाएँगे।
कामरोग के तीखे तेवर, नाथ! यहाँ बिखराएँगे।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

असफल किए प्रयास अनेकों, क्षुधा रोग विनशाएँगे।
क्षुधा विनाशी नाथ! चरण में, यह नैवेद्य चढ़ाएँगे।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप शिखा की लौ इस जग में, श्याम तिमिर की नाशी है।
आत्म ज्ञान के दीपक की लौ, केवलज्ञान प्रकाशी है।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जग के, सारे जीव झुलसते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, कर्म पूर्णतः नसते हैं।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपल फल की आशा में ही, जग के प्राणी अटक रहे।
मौत के बन्दे बनकर प्राणी, सारे जग में भटक रहे।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प चरू शुभ, दीप धूप फल लेके साथ।
अर्घ्य चढ़ाकर के अनर्घ पद, प्राप्त करें तव चरणों नाथ!।।
देहरे वाले चन्द्रप्रभू ने, जग के कष्ट मिटाए हैं।
अतः आपकी पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्दप्रभु चरण छतरी का अर्घ्य

संवत् दो हजार तेरह शुभ, श्रावण सुदि दशमी गुरुवर।
चन्दप्रभु देहरे में प्रगटे, हुई धरा पर जय-जयकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, श्री जिनके चरणों शुभकार।
चन्दप्रभु के पद में वन्दन, 'विशद' भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल दशम्यां देहरा स्थाने प्रगट रूपाय अतिशयकारी सर्वसंकटहारी श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि पाँचे एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निज का स्वरूप पहचाना।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन वदि सातै जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **देहरे में प्रगटे प्रभू, चन्द्रप्रभ भगवान।**
जयमाला गाते यहाँ, करते को गुणगान।।

(विगुपद छन्द)

चन्द्रप्रभू की महिमा सारे, इस जग ने गाई।
शरणागत बनके लोगों ने, पाई प्रभुताई।।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए प्रभु, सुर नर हर्षाए।
मात सुलक्षणा महासेन गृह, विशद हर्ष छाए।।1।।
राज-पाट सुख भोग प्राप्त भी, तुम्हे नहीं भाए।
छोड़ चले गृह जाल जानकर, संयम अपनाए।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, योग आप धारे।
विशद ज्ञान को पाया तुमने, नशे कर्म सारे।।2।।
समन्तभद्र मुनिवर ने तुमको, भाव सहित ध्याया।
प्रकट हुए पिण्डी के फटते, प्रभू दर्श पाया।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाए, चन्द्र प्रभू स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैशी, मुक्ती पथ गामी।।3।।
राजस्थान प्रान्त में अलवर, जिला श्रेष्ठ गाया।
प्रकट हुए देहरा में स्वामी, अतिशय दिखलाया।।
सावन सुदि दशमी को स्वामी, दिन में प्रगटाए।
जय जय कार हुई जगती पर, प्राणी हर्षाए।।4।।
तुम चरणों में भूत प्रेत की, बाधाएँ जावें।
चरणों की रज माथ लगाते, इच्छित फल पावें।

दुखिया दर पे आने वाले,दुख खोके जाते।
निर्धन धन की इच्छा करते, इच्छित धन पाते।।5।।
चमत्कार इस सारे जग में, फैला है भाई।
जिसने जो इच्छा की दर पे, वह वस्तू पाई।।
महिमा सुनकर नाथ! आपके, हम दर पे आए।
अर्घ्य चढ़ाने अष्ट द्रव्य का 'विशद' चरण लाए।।6।।

दोहा- **चन्द्र चाँदनी सम रहे, चन्द्र प्रभू भगवान।**
जिनकी अर्चाकर विशद,पाना शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं देहरा स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

दोहा- **अष्टम तीर्थंकर बने, अष्ट गुणों के ईश।**
आठों अंगों को नमित, झुका रहे हम शीश।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री पुष्पदन्त पूजन

(स्थापना)

पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।
करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाऊँ जयमाल कर, पाऊँ मोक्ष निधान।।

(पद्धडि छन्द)

जय-जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।
जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हे प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रात:काल।।
जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।
जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।
जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ती कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय-जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।
प्रभु दीजे जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।
जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।।
जय-जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।
जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।
निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्फल प्रभु निराकार।।

दोहा - आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा- पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।
पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेशहर लीजिए।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना (सोरठा)

वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा- **जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।**
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास॥4॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण॥5॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल॥6॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द॥7॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार॥8॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥9॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥2॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को॥4॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥5॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।**
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे॥1॥
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान॥2॥
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए॥3॥
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान॥4॥
दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ॥5॥
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥6॥

दोहा– **चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।**
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।**
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री शांतिनाथ भगवान की पूजा (टोंक नसिया)

स्थापना

शांतिनाथ है नाम आपका, करते जग को शांति प्रदान।
विशद शांति के इच्छुक प्राणी, करें हृदय में तव आह्वान।।
टोंक नगर की नसिया में प्रभु, मूलनायक है शांतीनाथ।
जिनके चरणों भक्त भाव से, नत हो स्वयं झुकावें माथ।।

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, करें जगत कल्याण।**
शांतिनाथ का निज हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं टोंक नसिया नवनिर्मित जिनालय स्थित मूलनायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अतवर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं टोंक नसिया नवनिर्मित जिनालय स्थित मूलनायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं टोंक नसिया नवनिर्मित जिनालय स्थित मूलनायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

जल पीकर भी मन उलझा है, मेरा तृष्णा के शोलों में।
सच्चा सुख पाया कभी नहीं, धारण कर तन के चोलों में।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गरमी है अग्नी से ज्यादा, मेरे तन मन की चाहों में।
शीतलता पाने को भटके, इस सारे जग की राहों में।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अब हमें समझना निज स्वरूप, कर्मों का झूठा नाता है।
कर्मारी को जो जीत सके, वह ही अक्षय पद पाता है।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की मादकता के कारण, प्राणी जग के मतवाले हैं।
निज का स्वरूप जो जान गये, खुल गये हृदय के ताले हैं।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ क्षुधा बहुत बलशाली है, हम शान्त नहीं कर पाते हैं।
चरु ज्ञान सरस जो चख लेते, जग भोग उन्हें न भाते हैं।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मोह तिमिर छा जाए तो, निज का स्वरूप खो जाता है।
चेतन का द्वीप जले उर में, ईश्वर वह तब हो जाता है।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहाधंकार विनाशय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल मिलता सबको, बेकार जीव यह रोता है।
निज के स्वभाव में रमण करे, वह सिद्ध स्वयं ही होता है।।

श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको प्रभु अच्छा फल देना, यह कहते नाथ लजाते हैं।
जो निज स्वभाव में रमण करें, वे निश्चय शिव फल पाते हैं।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक चुके चारों गति में, अब भ्रमण और नहिं करना है।
तव गुण गाते हे नाथ! विशद, अब भव सागर से तरना है।।
श्री शांतिनाथ जी नवनिर्मित, नशियाँ मंदिर में मन भाते।
जो अतिशय शांती प्रदायक हैं, जिनके पद में हम सिरनाते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वसंकट हारी शांतीदायक मोक्ष प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांती का दरिया बहे, नाथ! आपके द्वार।**
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्पांजलि कर पूजते, तव चरणों को आज।**
कृपा करो निज भक्त पर, तारण तरण जहाज।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग में हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुँजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **भक्ती करने को हुए, भक्त यहाँ वाचाल।**
नाथ! आपकी भक्ति से, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द अष्टक)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरे, तो ज्ञान रोशनी खिलती है।।
प्रभु पूरब भव में भी तुमने, सद् यंयम को अपनाया था।
सर्वार्थसिद्धि के सुख भोगे, ये पुण्य का ही फल पाया था।।
तैंतिस सागर की आयु पूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
प्रभु हस्तिनापुर में माता श्री, ऐरोदेवी को धन्य किया।।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भू पर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पौंछ दिया।।

दाँये पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया।।
फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी।।
फिर जाति स्मरण को पाकर, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया।।
फिर ध्यान अग्नि को पकर के, प्रभु कर्म घातिया नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवलज्ञान प्रकाश किए।।
श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवे जग में कहलाए।
शुभ दिव्य देशना दिए आप, तब सुनने भव्य जीव आए।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्वहितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए।।
है राजस्थान में टोंक जिला, नसिया अतिशय मनहारी है।
श्री शांतिनाथ की धवल मूर्ति, शुभ पावन अतिशयकारी है।।
शर्मा कॉलोनी है टोंक नगर, जिनबिम्ब तेईस शुभ प्रगटाए।
कार्तिक सुदि तेरस शुभ सम्वत्, जो बीस सौ पैंसठ कहलाए।।
श्री शांतिनाथ की पूजा कर, कई लोगों ने फल पाया है।
दुखियों के दुख नश गये पूर्ण, उनने सौभाग्य जगाया है।।
हम पूजा करने हेतु 'विशद', यह द्रव्य मनोहर लाए हैं।
दो मुक्ती हमें भवसागर से, यह फल पाने को आए हैं।।

दोहा- **कामदेव चक्रेश अरु, जिन तीर्थेश महान।**
तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं टोंक नशियाँ नवनिर्मित जिनालय स्थित मूलनायक परम शांती प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शान्तिनाथ भगवान का, जपें निरन्तर जाप।**
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि हो, करके चरण प्रणाम।।

।। इत्याशर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

भूगर्भ स्थित प्रतिमाओं का उद्भव स्थल

चरण छत्री का अर्घ्य

प्रगट हुए श्री शांति जिन, बाईस मूर्तियाँ साथ।
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं टोंक नगरे शर्मा कॉलोनी स्थाने प्रगटित त्रयोविंशति जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ पूजा (बड़ा मंदिर टोंक)

स्थापना

टोंक नगर के मध्य में स्थित, बड़ा मंदिर है अतिशयवान ।
मूलनायक श्री शांतिनाथ हैं, श्वेत वर्ण के आभावान।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, पाते अतिशय पुण्य निधान ।
भाव सहित अर्चा करते जो, वे हो जाते वैभववान ।।

दोहा- **परम शांति के कोष जिन, करते शांति प्रदान ।**
शांतिनाथ तीर्थेश का, करते हम आह्वान ।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।।शम्भू छन्द।।

हमने अनादि से कर्मों के, बन्धन करके बहु दुःख सहे ।
हम राग-द्वेष की परिणति से, तीनों लोक में भटक रहे ।।

अब जन्म जरा के नाश हेतु, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं ।
श्री शांति प्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव भोगों की रही कामना, जिससे जग में भ्रमण किया ।
भव संताप मिटाने का न, हमने अब तक यतन किया ।।
नाश होय संसार ताप मम्, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।। 2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

विषय कषायों में रत रहकर, निज पद को न पाया है ।
क्षण भगुंर जीवन पाकर के, तीनों लोक भ्रमाया है।।
अक्षय पद पाने को अभिनव, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।। 3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह महामद को पीकर के, जीवन व्यर्थ गँवाए हैं ।
काम बाण से बिद्ध हुए हम, अब तक चेत न पाए हैं।।
काम वासना नाश हेतु यह, पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रौं व्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम विषय भोग की ज्वाला में, सदियों से जलते आए हैं।
आशाएँ पूर्ण न हो पाई, हमने कई जन्म गँवाए हैं ।।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, अतिशय नैवेद्य चढ़ाते हैं
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है घोर तिमिर मिथ्या जग में, जिससे जग जीव भ्रमाए हैं।
अतिशय प्रकाश का पुंज जीव, अब तक यह समझ न पाए है।।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह मनहर दीप जलाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानावरणादि कर्मों नें, इस जग में जाल बिछाया है।
हम फँसे अनादी से उसमें, छुटकारा न मिल पाया है।।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नि में धूप जलाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज पुण्य पाप का फल पाकर, हम उसमें रमते आए हैं।
हम भटक रहे हैं निज पद से, न अक्षय फल को पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, चरणों फल सरस चढ़ाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शाश्वत है जीव अनादि से, हम अब तक जान न पाए हैं।
तन में चेतन का भाव जगा, उसको अपनाते आए हैं।।
हम पद अनर्घ्य पाने हेतू, अतिशय यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री शांतिप्रभु के चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- **जलधारा देते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।**
झुका रहे हम भाव से, चरण कमल में माथ ।।

।।शान्तये - शांतिधारा।।

दोहा- **करते हैं पुष्पांजलि, लेकर पुष्पित फूल।**
प्रभु भक्ती की भावना, बनी रहे अनुकूल ।।

।इति पुष्पांजलि क्षिपेत्।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी पाए, प्रभू गर्भ में चयकर आये।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए ।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भ कल्याणकप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी।
सारे जग में हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया ।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दश्यां जन्म कल्याणकप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, शांतिनाथ जिन दीक्षा धारी।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया ।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दश्यां दीक्षा कल्याणकप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष शुक्ल दशमी शुभ जानो, विशद ज्ञान पाये प्रभु मानो।
ॐकार मयी ध्वनि गुँजाए, भव्यों को शिव राह दिखाए ।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान कल्याणकप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ कृष्ठ चौदस शुभ पाए, शांतिनाथ जिन मोक्ष सिधाए।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए ।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणकप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **तिष्ठे हैं स्वभाव में, जिनवर शांतीनाथ।**
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाते माथ।।

चौपाई

शांतिनाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
जो हैं जन- जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
सर्वाथसिद्धि से चय आये, हस्तिनागपुर धाम बनाए।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी ।।
इन्द राज ऐरावत लाया, प्रभु के पद तब शीश झुकाया ।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया,उसने अतिशय पुण्य कमाया ।।
आनन्दोत्सव महत् मनाया, तन मन से जो शुभ हर्षाया ।
प्रभु की भक्ति की जो भारी, हर्षित हुए सभी नर नारी।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवल ज्ञान जगाया ।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए ।।
तीर्थ बने कई अतिशयकारी, जो हैं भव्यों के उपकारी ।
वीतराग मुद्रा प्रभु पाए, भव्य भक्ति करके हर्षाए।।
भादव सुदि तेरस शुभ जानो, बीस सौ दस सम्वत है मानो।
नसियां में छतरी बतलाई, छब्बिस प्रतिमाएँ प्रगटाई ।।
सात बड़े मंदिर में आई,धवल श्रेष्ठ शुभ श्वेत बताई।
शांतिनाथ वेदी में गाए, मूलनायक जो प्रभु कहलाए ।।
बड़ा मंदिर प्राचीन है भारी, है अतिशय जो महिमाकारी ।
श्रद्धालू श्रद्धान जगाते, पूजा आरति कर हर्षाते ।।
श्रावक कई आते शुभकारी, जय जयकार लगाते भारी ।
आके अतिशय पुण्य कमाते, अपने जो सौभाग्य जगाते।।
मन में यही भावना भाएँ, बार-बार हम दर्शन पाएँ।
दर्शन कर श्रद्धान जगाए, पूजा करके ज्ञान उपाए।।

करे आरती मंगलकारी, जो कर्मों की नाशन हारी ।
हे शरणागत विस्मयकारी, शरण आपकी हो शुभकारी ।।
मोक्ष महल जब तक न पाएँ, तब तक तुमकों हृदय बसाएं ।
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी ।।

दोहा- **शांति पाने हम यहाँ, आए शांतिनाथ।**
पूर्ण करो आशा मेरी, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं टोंक बड़ा जैन मन्दिर स्थित जगदापद्विनाशक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम शीश।**
मुक्ती हमको दीजिए, मुक्ती पद के ईश ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजा (सांखना)

स्थापना

शांतिनाथ की महिमा को यह, जग दुहराता आया है ।
शांति प्रभू को जिसने ध्याया, उसने हर सुख पाया है ।।
टोंक जिला में ग्राम सांखना, शांतिनाथ का अतिशय धाम।
दूर-दूर से भक्त चरण में, आके करते विशद प्रणाम ।।

दोहा- **शांती का दरिया बहे, शांतिनाथ के द्वार ।**
आह्वानन् करते अतः, हे प्रभु! बारम्बार ।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र सांखना स्थित सर्व मंगलकारी महाशांति प्रदायकश्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र सांखना स्थित सर्व मंगलकारी महाशांति प्रदायकश्री शांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र सांखना स्थित सर्वमंगलकारी महाशांति प्रदायकश्री शांतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

गंगाजल से क्षीरोदधि से, अपने तन को धोया है।
विषय भोग की माया में ही, जीवन अपना खोया है।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रिय विषयों में ही जीवन, मेरा रमता आया है।
जग वैभव में अटके लेकिन, निज वैभव ना पाया है ।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनन्त पाए भव भव में, तृष्णा शान्त ना हो पाई ।
श्री जिनेन्द्र का दर्शन करके, अक्षय पद की सुधि आई ।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

भोगों के ईधन द्वारा क्या? कामाग्नि बुझ सकती है ।
ईधन जितना डालो उसमें, उतनी तेज धधकती है ।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।4।।

ॐ र्रां र्रीं र्रूं र्रौं र्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धात्म प्रदेश असंख्यों से, समरस के झरने झरते हैं ।
ज्ञानी करते रसपान विशद, जो निज में सदा विचरते हैं।।

सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।5।।

ॐ घ्रां घ्री घ्रूं घ्रौं घ्र : जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धात्म प्रकाशक ज्ञान दीप, श्रद्धा से ज्योर्तिमय होवे।
मिथ्यात्व मोह तम नशते ही, अनुभव शुद्धात्म प्रखर होवे।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।

निज आत्म तत्त्व में तन्मयता, तप की शुभ आग जलाती है।
तब सर्व शुभाशुभ कर्मों की, कालुषता ही जल जाती है।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज शुद्ध भाव के तरु के फल, शुद्धात्म ध्यान से फलते हैं।
जो आत्म ध्यान की परिणति से, निज मोक्ष महाफल मिलते है।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज ज्ञान अर्घ्य वसु विधि लेकर, ज्ञायक स्वभाव प्रगटाए हैं।
निज पद अनर्घ्य पाने हेतु, हे नाथ! शरण में आए हैं।।
सांखना के श्री शांति प्रभु को, भाव सहित जो ध्याते हैं।
भव्य भक्त चरणों की अर्चा, कर सौभाग्य जगाते हैं।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद विनाशनाय सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांती की है कामना, शांती की ही आश।**
शांती पाकर के विशद, पाएँ शिवपुर वास ।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **प्रभु पूजा के भाव से, हों निर्मल परिणाम ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, मोक्ष मिले निष्काम ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

पंचकल्याणक अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी पाए, स्वर्ग से चय के गर्भ में आए।
शांतिनाथ पद पूज रचाते, नाथ! आपकी महिमा गाते।।1।।

ॐ ह्रीं भादों कृष्ण सप्तमी गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जेठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्म लिये जिन अन्तर्यामी।
शांतिनाथ पद पूज रचाते, नाथ! आपकी महिमा गाते।।2।।

ॐ ह्रीं जेठ कृष्ण चौदस जन्म कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जेठ कृष्ण चौदस सुखकारी, दीक्षा धार हुए अविकारी।
शांतिनाथ पद पूज रचाते, नाथ! आपकी महिमा गाते।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष शुक्ल दशमी जिन पाए, पावन केवलज्ञान जगाये।
शांतिनाथ पद पूज रचाते, नाथ! आपकी महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दश्मयां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, मुक्ती पाये श्री जिन मानो।
शांतिनाथ पद पूज रचाते, नाथ! आपकी महिमा गाते।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **ग्राम सांखना के प्रभू, शांतिनाथ भगवान ।**
जयमाला गातें यहाँ, करते हैं गुणगान ।।

चौपाई

भारत देश का प्रान्त बताया, राजस्थान श्रेष्ठ शुभ गाया ।
टोंक जिला है अति मनहारी, ग्राम सांखना मंगलकारी।।
शांतिनाथ जी अतिशयकारी, धवल रंग के विस्मयकारी ।
मंदिर अति प्राचीन कहाया, शाह गोत्रियों ने बनवाया ।।
सौलह सौ इक्तिस शुभ जानो, विक्रम संवत गाया मानो ।
चन्द्रकीर्ति भट्टारक आए, श्रेष्ठ प्रतिष्ठा जो करवाये ।।
शिला लेख मंदिर में गाए, मंदिर का इतिहास बताए ।
सोलंकी गुजरात से आए, शांतिप्रभू को इष्ट बनाए ।।
हाड़ा राज वंशी जो आए, उनसे वह संबंध बनाए ।
कृपा प्रभू की वे फिर पाए, राज्य स्थापित तब करवाए ।।
मुगल मूर्ति खण्डन को आए, श्रावक तब मन में घबड़ाए ।
अन्य स्थान ले जाने आए, किन्तू मूर्ति हिला न पाए ।।
लोग अधिक जब जोर लगाए, मूर्ति फटी तो सब घबड़ाए ।
मंदिर भरा दूध से पाए, श्रावक मन में खेद मनाए ।।
स्वप्न भक्त को रात में आया, लोगों के मन बोध जगाया ।
आटे का सीरा बनवाओ, प्रतिमा में जिसको लगवाओ।।
सांकल से प्रतिमा बँधवाओ, णमोकार का जाप कराओ।
अतिशय हुआ तभी यह भाई, सांकल तब वह टूटी पाई।।
अश्विनवदि एकम का जानो, मूर्ति अखण्डित हुई थी मानो।
लोगों ने तब हर्ष मनाया, तब से मेला लगता आया।।
दूर-दूर से यात्री आए, दर्शन कर सौभाग्य जगाए।
धारा मूर्ति में दिखती जानो, दिखे जनेऊ ऐसा मानो ।।

शांतिनाथ शांति के दाता, जीवों के हैं भाग्य विधाता ।
भाव सहित जो पूज रचाते, वे अपने सौभाग्य जगाते ।।

दोहा- **'विशद' सिन्धु आचार्य ने,पूजा रची विशाल ।**
शांतिनाथ के पद युगल, वन्दन करें त्रिकाल ।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र सांखना स्थित सर्व मंगलकारी शांति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- **श्री जिनेन्द्र की अर्चना, करते हैं जो लोग ।**
सुख शांति सौभाग्य का, पाएँ विशद संयोग ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत।।

श्री शांतिनाथ पूजा (निवाई)

स्थापना

हे शांति नाथ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी ।
तुम तीन लोक मे पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी ।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे शान्तिनाथ करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी ।।
हे नाथ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर! उर में आओ।।

ॐ ह्रीं निवाई जिनालय स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं निवाई जिनालय स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं निवाई जिनालय स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। चौबोला छन्द ।।

स्वादिष्ट पेय जग के सारे, मम प्यास बुझा ना पाए हैं ।
अतएव नाथ तव चरणों में, हम नीर चढ़ानें लाए हैं।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।

हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा ।

चंदन केशर की गंध बना, प्रभु आज चढ़ाने लाए हैं ।
जो लगा अनादि आतम में, भव ताप नशाने आए हैं ।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा।

प्रभु पापों की आशाएँ ले, हम हर गति में भरमाए हैं ।
अब अक्षय पद पाने स्वामी, यह अक्षत लेकर आए हैं ।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि.स्वाहा ।

निज आतम शांति पाने हेतू, हम विषयों में भटकाए है।
अब कामवाण हो नाश प्रभू, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

रसना की लोलुपता वश हो, कितने ही पाप कमाए हैं।
नैवेद्य चढ़ाकर हम अनुपम, अब क्षुधा नशाने आए हैं ।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा ।

दीपक में ज्योति जलते ही, सब घोर अंधेरा नश जाए ।
अतएव जलाकर दीप विशद, मोह नशाने आए हैं ।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.स्वाहा ।

जिन शुक्ल ध्यान की अग्नि में, कर्मों की धूम उड़ाए हैं।
अब धूप जलाकर जिन पद में, हम कर्म नशाने आए हैं।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

जिस मोक्ष महाफल पाने को, जग का प्राणी तरसाए ।
यह सरस श्रेष्ठ फल अर्पित कर, वह फल पाने को हम आए।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.स्वाहा ।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप फल हम लाए ।
पाने अनर्घ्य पद हे स्वामी, हम आशा लेकर आए हैं ।।
श्री शांतिनाथ शांती दायक, इस जग में आप कहाए हैं।
हम निवाई नगर के शांति प्रभू, की पूजा करने आए हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **शांतीधारा के लिए, क्षीरोदधि का नीर ।**
चढ़ा रहे हम जिन चरण, मिट जाए भव पीर ।।

।। शान्तये शांति धारा ।।

दोहा- **सुरभित लेकर पुष्प यह, अर्चा करते माथ ।**
पुष्पांजलि करके विशद, झुका रहे पद नाथ ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, विश्वसेन नृप के गृह मानो ।
रत्न वृष्टि को इन्द्र पधारे, बोले प्रभु के जय जयकारे ।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

ज्येष्ठ वदी चौदश शुभकारी, हस्तिनापुर में मंगलकारी।
माँ ऐरावति के गृह आए, जिनके चरणों माथ झुकाए।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

ज्येष्ठ वदी चौदस मनहारी, जिनवर शांतिनाथ शिवकारी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, लोग किये तव जय जयकारे।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पौष सुदी दशमी दिन पाए, कर्म घातिया आप नशाए।
निज आतम में रमने वाले, केवलज्ञानी आप निराले।।

ॐ ह्रीं पौष सुदी दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कूट कुन्दप्रभ पे प्रभु आए, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशि पाए ।
वसु कर्मों का नाश किया है, नर जीवन का सार लिया है।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल ।**
शांतिनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल ।।

(छन्द अष्टक)

सर्वार्थ सिद्धि से चय करके, श्री शांतिप्रभु अवतार लिए ।
श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किये ।।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया ।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया ।।1।।

सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पौंछ दिया।।
दाये पग में लख हिरण चिह्न, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा ।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा ।।2।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया ।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया ।।
फिर शांतिनाथ भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी ।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी ।।3।।
छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योगमयी न हो पाए ।
भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न हो पाए ।।
यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया ।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, संयमप्रभु ने अपनाया ।।4।।
फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातिया नाश किए ।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवें जग में कहलाए ।
प्रभु समवशरण उपदेश दिए, तब सुनने भव्य जीव आए ।।5।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म घातिया नाश किए ।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए ।।
हैं निवाई नगर के शांतिनाथ, जो अतिशय शांति प्रदान करें ।
श्रद्धा से जिनके चरणों में, हम भाव सहित गुणगान करें ।।6।।

दोहा- **कामदेव चक्रेश अरु, जिन तीर्थेश महान ।**
तीन-तीन पद धार कर , शिवपुर किया प्रयाण ।।

ॐ ह्रीं निवाई जिनालय स्थित परमशांती प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- **धन्य 'विशद' दिन वह घड़ी , जिन पूजा की आज ।**
सुख सम्पत्ति सौभाग्य हो, मिले मोक्ष साम्राज्य ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ पूजा (आवाँ)

स्थापना

शांतिनाथ जी शांति प्रदायक, तीन लोक में मंगलकार ।
काम देव चक्की तीर्थंकर, तीनों पद धारी शुभकार।।
आवाँ अतिशय क्षेत्र कहाए, जहाँ विराजे अतिशय वान ।।
हृदय कमल में आ तिष्ठों प्रभु, करते भाव सहित आह्वान ।

ॐ ह्रीं आँवा स्थित अतिशयकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं आँवा स्थित अतिशयकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं आँवा स्थित अतिशयकारी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

हम जल से पूज रचाते, जिन पद में शीश झुकाते ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 1।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा ।

चन्दन जिन पाद चढ़ाते, भव ताप नशाने आते ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 2।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा ।

अक्षय अक्षत मनहारी, हम चढ़ा रहे शिवकारी ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 3।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा ।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम से मुक्ति पाएँ ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 4।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा ।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा ।

घृत का ये दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहानधकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा ।

अग्नी में धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 7।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

फल यहाँ चढ़ाते भाई, जो हैं अक्षय फलदायी ।
हे शांतिनाथ शिवकारी, तव पद में ढोक हमारी ।। 8।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.स्वाहा ।

हर्षित हो अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ ।
हे शांतिनाथ शिवकारी तव पद में ढोक हमारी ।। 9।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **शांती का दरिया बहे , नाथ! आपके द्वार ।**
विशद शांति पाने यहाँ, देते शांतीधार ।।

।।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान ।**
विशद भाव से आज हम, करते है गुणगान ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी पावन, ऐरादेवी उर धारे ।
रत्न वृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे ।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

ज्येष्ठ वदी चौदशी सुपावन, हस्तिनापुर में शांतिनाथ।
माँ ऐरा के गृह में जन्में, जिनके चरण झुकाउँ माथ ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

ज्येष्ठ वदी चौदस मनहारी, जिनवर शांतिनाथ स्वामी ।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी ।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

पौष सुदी दशमी के दिन प्रभु, कर्म घातिया नाश किए ।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।4।।

ॐ ह्रीं पौष सुदी दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

कूट कुन्द प्रभ तीर्थराज पर, चौदश ज्येष्ठ कृष्ण मनहार।
वसु कर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार ।।

अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **तिष्ठें आवां क्षेत्र में, जिनवर शांतीनाथ ।**
जयमाला गाते यहाँ, चरण झुकाते माथ ।।

(बेसरी छन्द)

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के आप विधाता ।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन के दुखहारी।।
अपराजित से चयकर आए, मात पिता को धन्य बनाए ।
नगर हस्तिानापुर शुभ गाए, प्रभु का जन्म स्थल कहलाए ।।
भादों कृष्ण सप्तमी जानो, गर्भ में आये प्रभु जी मानो ।
देव रत्न वृष्टी करवाए, मन में अतिशय हर्ष मनाए ।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को स्वामी, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी ।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, पाण्डुक वन अभिषेक कराया ।।
ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश भाई, शांति प्रभू ने दीक्षा पाई ।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे ।।
मुनिव्रत धार हुए अविकारी, उत्तम संयम तप के धारी ।
कर्म घातिया आप नशाए, पावन केवल ज्ञान जगाए ।।
पौष शुक्ल दशमी तिथि पाए, समवशरण आ देव रचाए ।
दिव्य देशना आप सुनाए,भव्य जीव श्रद्धान जगाए।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभ गाई, गिरि सम्मेद शिखर पे भाई ।
कुन्द कूट प्रभ से जिन स्वामी, मोक्ष गये जिन अन्तर्यामी ।।
टोंक जिला में आवाँ जानो, अतिशय क्षेत्र रहा शुभ मानो ।
शांतिप्रभू अतिशय दिखलाए, जन जन के मन मोद जगाए ।।

विक्रम संवत का शुभ जानो, पन्द्रह सौ तेरानवे मानो।
भट्टारक जिनचन्दजी आए, पंचकल्याणक जो करवाए ।।

दोहा- **अतिशय कारी क्षेत्र पर, अतिशय किए महान।**
अतः भव्य जन आपका, करते हैं गुणगान ।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता अतिशय क्षेत्र आवाँ स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांति प्रभू के द्वार पर, होती पूरी आस ।**
जीवन सुखमय हो विशद, पूरा है विश्वास ।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

मुनिसुव्रत पूजा (जहाजपुर)

स्थापना

दोहा- **मुनिसुव्रत व्रत धार कर, हुए श्री के नाथ।**
भक्त चरण में भाव से, अतः झुकाते माथ।।
प्रगट हुए भू गर्भ से, प्रभु जहाज पुर ग्राम।
अतिशय कई दिखाए हैं, जिन पद विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अर्ध जोगीरासा छन्द)

जन्म जरा का रोग नशाने, झारी भर कर लाए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

भव आताप मिटाने को, यह शुभ चंदन घिस लाए।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा

अक्षय पद को अक्षय कर दो, अक्षत धोकर लाए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि.स्वाहा ।

काम वाण के नाश हेतु यह, पुष्प मनोहर लाए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

क्षुधा रोग के नाश हेतु यह, चरु लेकर के आए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा

मोह महातम हो विनाश यह, दीप जलाकर लाए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अष्ट कर्म के दहन हेतु यह, धूप बनाकर लाए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनायनाय धूपं नि.स्वाहा ।

मोक्ष महाफल पाने को यह, श्री फल लेकर आए ।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।8।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि.स्वाहा ।

अष्ट गुणों को पाने हेतु, अर्घ्य बनाकर लाए।
श्री मुनिसुव्रत जी के चरणों, अर्चा करने आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

सोरठा- **शांति मिले अनूप, देते शांति धार हम।**
पाएँ निज स्वरूप, अर्चा करते आपकी ।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

सोरठा – पुष्पांजलि हे नाथ!, चरणों करते भाव से।
चरण झुकाते माथ, शिवपद पाने के लिए।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए ।।1।।

ॐ ह्रीं सावन कृष्णा द्वितीयायां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दशों कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए ।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए ।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए ।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी ।
जगमग-जगमगदीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

फागुन वदि दशमी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर धाम बनाए ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा दशम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल ।**
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल ।।

।। नरेन्द्र छन्द ।।

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये ।
राजग्रही में खुशियाँ छाई, जग जन सब हर्षाए ।।

नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई ।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाए थे भाई ।।
तीन लोक में खुशियाँ छाई ,घड़ी जन्म की आई ।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊचाई ।।
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया ।
बीस हजार वर्ष की आयु, श्याम रंग शुभ गाया ।।
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए ।।
पंच मुष्ठि से केशलुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए ।
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी ।।

दोहा- **अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश ।**
कूट निर्जरा से प्रभु, नाशे कर्म अशेष ।।

ॐ ह्रीं जहाजपुर अतिशय क्षेत्र स्थित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर जाप ।**
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावें वह शिव धाम ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री नेमिनाथ पूजा (पुरानी टोंक)

स्थापना

दोहा- **राज तजा राजूल तजी, तजे स्वजन परिवार ।**
संयम धारा आपने, चढ़कर गिरि गिरनार ।।
राही मुक्ती मार्ग के, बने आप भगवान ।
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इतिआह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

प्रासुक निर्मल नीर भरायें, श्री जिनवर के चरण चढ़ायें ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

भव सन्ताप नशाने आते, अतः चरण में गंध चढ़ाते ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा ।

अक्षत धोय मनोज्ञ बुलाए, अक्षय पद पाने को आए ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.स्वाहा ।

काम अन्ध है प्रभु मन मेरा, तुम चरणों में होय बसेरा ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय काम वाणविध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा ।

सरस सद्य नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग अपना विनशाए ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा ।

मोह महातम है दुखदायी, उसे नशाने ज्योति जलाई।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।

कर्मों से हम बहुत सताए, उनके नाश हेतू पद आए ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

फल से जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष महाफल हम पा जाएँ ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि.स्वाहा ।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाएँ, पद अनर्घ्य अर्चा कर पाएँ।
नेमिनाथ पद पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते ।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **श्री जिनेन्द्र के पद, युगल देते शांतिधार ।**
शांति पाएँ निज हृदय, पाएँ भव से पार ।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा- **चरण कमल की भाव से, पूजा करें महान ।**
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया ।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए ।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लषष्ठम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्में जिन अन्तर्यामी ।
भू पे छाई उजियारी, पा दिव्य दिवाकर लाली ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लषष्ठम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई ।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लषष्ठम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए ।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

आठें आषाढ़ सुदि गाई,भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़ें ।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लअष्टम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल ।**
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल।।

।। तोटक छन्द ।।

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज ।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन ।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हें महान ।
सुर जन्म कल्याणक किये आन, है शंख चिह्न जिनका प्रधान ।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान ।।
जीवों पर करूणा आप धार, मन में जागा वैराग सार ।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़ ।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार ।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।
तव दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए शिव निवास।

दोहा- **भोगों को तज योग धर, दिए ' विशद' सन्देश ।**
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष ।।

ॐ ह्रीं पुरानी टोंक जिनालय स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- **गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ ।**
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ भगवान पूजा (नैनवा)

स्थापना (नरेन्द्र छन्द)

नेमिनाथ जी नगर नैनवा, में महिमा दिखलाए ।
भव्य जीव जिनकी अर्चा कर, अतिशय पुण्य कमाए।।
आह्वानन कर अतः प्रभू को, अपने हृदय सजाते।
तीन योग से श्री जिनेन्द्र की, महिमा अद्भुत गाते।।

ॐ ह्रीं नैनवा स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं नैनवा स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं नैनवा स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

।।नरेन्द्र छन्द ।।

समता जल से कर्म कालिमा, नष्ट किए हैं जिन स्वामी।
जन्म जरादिक नाश प्रभू जी, आप हुए अन्तर्यामी ।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा ।

हम संतप्त हुए हे स्वामी, राग द्वेष की ज्वाला से ।
त्रस्त हुये भटके चारों गति, पाप कर्म की हाला से।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा ।

अक्षय निधि के स्वामी हो प्रभु, अक्षय पद जग को देते ।
भक्ती करने वाले भक्तों, को भी निज सम कर लेते ।।

मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि.स्वाहा ।

कामदेव के वश होकर के, सुर नर हरि ब्रह्मा हारे ।
याचक बनकर कामदेव भी, प्रभु की भक्ती स्वीकारे ।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा ।

क्षुधा वेदना के वश हो नर, सब कुछ ही खो देते हैं ।
मोहित होकर के भोजन में, निज से च्युत हो लेते हैं।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवद्यं नि.स्वाहा ।

जड़ चेतन की माया में फँस, सबको अपना मान रहे ।
हमने जाल रचा है भव का, उसको सच्चा जान रहे ।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा ।

शुभ धूप गंध में रमे रहे, निज गंध नहीं हमने पाई ।
सिद्धों सम गुण के धारी हम, कर्मों की जिस पर काई ।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

फल यह ताजे सरस चढ़ाकर, जगतीपति पद सिरनाएँ।
शिवनारी के शिवराही की, अर्चा कर शिव पद पाएँ ।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.स्वाहा ।

परम पारिणामिक स्वभाव हे, प्रभु जी तुमने प्रगटाया ।
प्रभु अर्हंत् की वाणी को सुन, शिव पथ हमने अपनाया ।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, नेमिनाथ पद ध्याते हैं ।
विशद भाव से जिन चरणाम्बुज, में हम शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी मनोकामनापूर्ण कर्त्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- **शांती का दरिया बहे, नाथ आपके द्वार ।**
शांति के इच्छुक सभी, बोलें जय जयकार ।।

।।शांन्तये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्पांजलि अर्पित करें, भक्त शरण में आन ।**
शिव पथ के राही बने, पाके शिव सोपान ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक अर्घ्य

कार्तिक शुक्ला षष्ठी पाय, गर्भ में आए नेमि जिनाय ।
अर्चा करते जिनकी आज, पाने को शिवपुर का राज ।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला षष्ठी गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

श्रावण शुक्ला षष्ठी जान,प्रभु जी पाए जन्म कल्याण ।
शौरीपुर है नगर महान, इन्द्र किए तव जय-जय गान ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला षष्ठी जन्म कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

श्रावण शुक्ला षष्ठी मान, धरे नेमि जी तप कल्याण ।
आम्र सु वन है अतिशय कार, प्रभू महाव्रत लीन्हे धार ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला षष्टम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

अश्विन शुक्ला एकम जान, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
दिव्य ध्वनि प्रभु की ॐकार, भव्य जीव पाए शिवकार ।।4।।

ॐ ह्रीं अश्विन शुक्ला एकम केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सुदि अषाढ़ आठें भगवान, प्राप्त किए हैं पद निर्वाण ।
ऊर्जयन्त गिरि के जा शीश, बने वहाँ से शिव के ईश ।। 5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **रत्नत्रय से जीव के, कटे कर्म का जाल ।**
नेमिनाथ जिनराज पद, गाते हैं जयमाल ।।

(तर्ज- करम के खेल कैसे हैं....)

करम के खेल कैसे हैं, नहीं हम जान पाते हैं ।
मिले संसार से मुक्ती, अतः पूजा रचाते हैं।। टेक।।

स्वर्ग अपराजित से चयकर, गर्भ में माँ के प्रभु आए।
शौरीपुर में प्रभू जन्में, हर्ष त्रय लोक में छाए ।।
इन्द्र मेरू पे ले जाके, न्हवन प्रभु का कराते हैं।
मिले संसार ....।।1।।

जन्म से आपके जग में, धन्य शुभ हो गया यदुकुल।
नेमि जी दूल्हा बनकर के, ब्याहने को चले राजुल।।
बंधे बाड़े में हो व्याकुल, पशू दुख से रंभाँते हैं ।
मिले संसार ....।।2।।

देख पशुओं की पीड़ा को, नेमि करुणा से भर आते।
धार वैराग्य अन्तर में, सुगिरि गिरनार को जाते ।।
बनी दुल्हन हुई व्याकुल, नेमि जब वन को जाते हैं।
मिले संसार ....।।3।।
गई समझाने को राजुल, नाथ! वन को नहीं जाओ।
प्रीत नौ भव की तोड़ी क्यों, राज हमको ये बतलाओ।।
सार संसार में नाहीं, अतः संयम को पाते हैं।
मिले संसार ....।।4।।
कर्म घाती प्रभू नाशे, ज्ञान केवल जगाया है।
सुगिरि गिरनार से प्रभु ने, सुपद निर्वाण पाया है।
नैनवा के जिनालय में, प्रभू महिमा दिखाते हैं।।
मिले संसार ....।।5।।

दोहा- **नेमिचन्द्र पधराये हैं, नेमिनाथ भगवान ।**
अर्चा करते भाव से, जिन की सुरनर नाथ।।6।।

ॐ ह्रीं नैनवास्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- **आगे मानस्तंभ है, मोहन कमलाकार ।**
'विशद' करे जग अर्चना, जिन पद बारम्बार ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत।।

गुरु महिमा

तप कर जिनका तन वज्र बने, मन से जो करुणाधारी हैं।
जो इन्द्रिय पर संयम रखते, भोगों के नहीं भिखारी हैं।।
जो राग-द्वेष को जीत रहे, संयम समता के द्वारा ही।
उन परम पूज्य विशद गुरु को, शत् शत् नमन हमारा है।।

श्री पार्श्वनाथ पूजा (आदर्श नगर टोंक)

स्थापना

भारत देश का प्रान्त निराला, कहलाए जो राजस्थान ।
टोंक जिला आदर्श नगर में, बना जिनालय महति महान ।।
मूल नायक श्री पार्श्वनाथ की, महिमा गाई अपरम्पार ।
आह्वानन् करके जिनका हम, वन्दन करते बारम्बार ।।

दोहा- **पारसमणि सम हे प्रभू! पार्श्वनाथ भगवान ।**
अर्चा करने के लिए, करते हम आह्वान ।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट निवारक ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं सर्व संकट निवारक ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व संकट निवारक ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ताटंक छन्द)

निर्मल वचन न निर्मल मन है, निर्मल न मम काया है।
आतम स्वच्छ नहीं हो पाई, पाप कर्म की माया है।।
यह निर्मल प्रासुक जल अनुपम, आत्म शुद्धि को लाए हैं ।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

बचपन क्रीड़ा में गुजर गया, विषयों में गई जवानी है।
भौंरा सम भ्रमण किया जग में, आगम की सीख न मानी है।
अब चंदन घिसकर के सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

पद के मद ने मदहोश किया, माया ने मन को ललचाया ।
चिन्ता ने चिता बना डाला, न अक्षय पद हमने पाया ।।

अक्षय यह श्रेष्ठ धवल अतिशय, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षत पद प्राप्ताय अक्षतं निर्व.स्वाहा ।

सौन्दर्य लुभाता जीवों को, मन काम वासना में भटके ।
विषयों की आशा में फंसकर, कर्मों के फंदे में लटके।।
यह पुष्प श्रेष्ठ अनुपम सुरभित, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

रसना रस की लोलुपता में, मन को व्याकुल कर देती है।
जब क्षुधा सताती प्राणी को, बुद्धी उस की हर लेती है।।
अब ताजे यह नैवेद्य बना, हम आतम शुद्धि को लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

छाया है मोह का अंधियारा, उसमें अनादि से भरमाया ।
बाहर में दीप जलाए कई, न ज्ञान का दीपक प्रजलाया।।
यह दीप जलाकर रत्नमयी, हम आत्म शुद्धि को लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।

कर्मों से नाता जोड़ा है, कर्मों ने हमको उलझाया ।
हम फंसे भंवर में कर्मों के, निष्कर्म भाव न मन भाया ।।
यह धूप दशांगी अग्नी में, हम खेने हेतु लाए है।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा

ताजे फल मन को तृप्त करें, मुक्ती फल की क्या बात अहा ।
जो सिद्धी तुमने पाई है, वह पाना मेरा लक्ष्य रहा ।।

श्री फल आदिक कई ताजे फल, हम यहां चढ़ाने लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फलप्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जग वैभव को अपना कह कर, यह जग वैभव में उलझाया ।
जब कर्म उदय में आया तो, कोई भी काम नहीं आया।
अब पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
आदर्शनगर में पार्श्व प्रभु के, गुण गाने हम आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

तिथि वैशाख कृष्ण द्वितिया को प्रभु, वामा माँ के उर आए।
पार्श्वनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, जन्में पार्श्वनाथ भगवान।
जय-जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्ण एकादशी पावन, पार्श्वनाथ दीक्षा धारी।
शिव सुख देने वाली दीक्षा, सर्व जगत मंगलकारी।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

कृष्णा चैत्र चतुर्थी जानो, पार्श्वनाथ तीर्थंकर मानो ।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये,समवशरण सुरनाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया ।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई ।
तीर्थराज से मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्ति वधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्यं चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर प्रभु जी बने, काट कर्म का जाल।**
पार्श्वनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल ।।

(तर्ज- तेरे पांच हुए कल्याण प्रभो ....)

किया तूने जगत उद्धार प्रभु, अब मेरा भी उद्धार कर दो ।
तुम सद्ज्ञानी आतम ज्ञानी, हमें भव सागर से पार कर दो ।। टेक।।

नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे ।
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे।।
अब मैं चाहूं भगवन-भगवन मेरे, मैं ज्ञान सहित आचरण करुँ।
वह दान मुझे आचार कर दो ।।1।।

सता रहे हैं कर्म अनेकों, मोहादिक ने मोह लिया ।
सत्पथ पर न बढ़े कभी भी, मिथ्या ने मजबूर किया ।।
अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, जो रत्नत्रय है धर्म मेरा ।
उस धर्म के अब आधार कर दो ।।2।।

भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए ।
रफता- रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए ।।
अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, तू है दाता ईश्वर सबका ।
अब दूर मेरा आगार कर दो ---।।3।।

जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर, तू है मस्जिद, विशद ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूं भगवन्-भगवन् जो नित्य निरंजन रूप मेरा ।।
वह निराकार आकार कर दो ।।4।।

जिसने प्रभु जी तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है ।
बिन माँगे ही सद्भक्तों ने, मनवांछित फल पाया है।।
अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, मैं तेरा ही गुणगान करुँ।।
उस ज्ञान का मुझको दान कर दो ।।5।।

किया तूने जगत उद्धार प्रभु, अब मेरा भी उद्धार कर दो ।
तुम सद्ज्ञानी आतम ज्ञानी, हमें भव सागर से पार कर दो ।।

दोहा- **कर्म श्रृंखला नाश कर, हुए मोक्ष के ईश ।**
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं आदर्श नगर जिनालय स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पंचमगति पाए प्रभू, पाए पंच कल्याण।**
विशद सिन्धु तव राह पर, हम भी करें प्रयाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान पूजा (निमोला)

स्थापना

अतिशय क्षेत्र निमोला पावन, टोंक जिले में रहा विशेष ।
जिन मंदिर में मूलनायक प्रभु, शोभा पावें पार्श्व जिनेश ।।
धवल रंग के पार्श्वनाथ हैं, अतिशयकारी आभावान ।
मनोकामना पूरी करते, भक्त प्रभू का कर गुणगान ।।

दोहा- **अर्चा करने के लिए, दोनों हाथ पसार ।**
आह्वानन करते प्रभू ! मन में श्रद्धा धार ।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र निमोला स्थित अतिशय युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

धोकर मिथ्यामल को जिनने, निज शुद्ध चेतना को पाया ।
शुभ वीतरागता की परिणति पा, सम्यक् चारित्र प्रगटाया ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व स्वाहा।

प्रभु चिदानन्द का चंदन ले, तुमने भव ताप नशाया है।
हे नाथ ! आपने निज स्वरूप, संयम शक्ती से पाया है ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व स्वाहा।

है सिद्ध सुपद अक्षय अखण्ड, निज अनुभव से तुमने जाना।
दुखदायी हैं इन्द्रादिक पद, शुभ कार्यों का फल यह माना ।।

श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्व स्वाहा।

है चिदानन्द मेरा स्वभाव, निज अनुभव से यह जान लिया ।
कामादिक भाव विभाव सभी, निज ज्ञान से ये पहचान लिया ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनायपुष्पं निर्व स्वाहा।

जीवन पर जीवन कई हमने, रसना के रस में खोए हैं।
पर चेतन रस से दूर रहे, कई बीज कर्म के बोए हैं।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व स्वाहा।

जिस मोह कर्म ने चक्रवर्ति, आदिक सबको मजबूर किया ।
उस मोह कर्म की शक्ती को, हे प्रभु तुमने चकचूर किया ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व स्वाहा।

हे नाथ आपने प्रकटाई, निज ध्यान के द्वारा तप ज्वाला।
निज आत्म लीनता के द्वारा, कर्मों का संवर कर डाला ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व स्वाहा।

प्रभु निर्विकार अविचल अनुपम, हे नाथ मोक्ष फल पाने को।
तुम परम समाधी लीन हुए प्रभु, सिद्ध शिला पर जाने को ।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व स्वाहा।

मद मोह राग का कोलाहल प्रभु, तुम्हें डिगा ना पाया है।
समभाव धारकर पद अनर्घ्य, हे प्रभु तुमने प्रगटाया है।।
श्री जिन की अर्चा की जिनने, वे पूजा का फल पाए हैं।
हम पार्श्व प्रभू जी तीर्थ निमोला, की पूजा को आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं निमोला क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- **लेकर निर्मल नीर यह, देते शांतीधार ।**
तीर्थंकर हे पार्श्व प्रभु , करो हमें भव पार ।।

।।शान्तये -शांतिधारा ।।

दोहा- **पुष्पांजलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार ।**
यही भावना है विशद, नशे भ्रमण संसार ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(मोतियादाम छन्द)

वैशाख कृष्ण द्वितिया महान, प्राणत से चयकर गर्भ आन ।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिथि पौष एकादशि को जिनेश, काशी नगरी जन्में विशेष ।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिथि पौष एकादशि सुतप धार, पद पाया तुमने अनागार।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिथि चैत कृष्ण की चौथ जान, प्रभु ने प्रगटाया विशद ज्ञान।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण चतुर्थी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण सुदि साते प्रातकाल, शिवपद पाया प्रभु ने त्रिकाल।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **करने को आये प्रभो! आज यहाँ प्रच्छाल ।**
पूजा करते आपकी, गाते हैं जयमाल ।।

(शम्भू छन्द)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर ।
हे परम बह्म हे कर्मजयी, हे मोक्ष प्रदाता शिवशंकर ।।
वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे ।।1।।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया ।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया ।।
वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस, हो गई बनारस शुभ नगरी ।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी ।।2।।
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरित वर्ण जो पाए थे ।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे ।।

तिथि पौष वदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे ।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बेले जयकारे ।।3।।
जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया ।
तब चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया।।
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया ।
फिर श्रावण सुदी सप्तमी को, प्रभु मोक्ष महल को वरण किया।।4।।
है राजस्थान का टोंक जिला, में ग्राम निमोला शुभकारी ।
हैं पार्श्व प्रभू जिन मंदिर में, जो रहे श्रेष्ठ अतिशयकारी ।।
प्राचीन जिनालय जीर्ण शीर्ण, पंचों ने नव निर्माण किया ।
निर्माण हेतु तब लोगों ने, खुलकर खुश हो के दान दिया ।।5।।
वैशाख सुदी साते संवत शुभ, दो हजार बावन पाए ।
श्री पार्श्व प्रभू को समारोह, करके वेदी में पधराए ।।
है जोड़ा एक कबूतर का, जो मंदिर में ही सदा रहे ।
जो यक्ष यक्षणी है शायद, सब लोग वहां पर यही कहें।।6।।
वार्षिक समारोह भी होता है, पौष वदी एकादशी जान ।
मनोकामना पूरी होती, जिन चरणों में कर गुणगान ।।
यही भावना भाते हैं प्रभु, दर्श करें हम बारम्बार।
जागे मम सौभाग्य प्रभू हम, वन्दन करते हैं शतबार।।7।।

दोहा- **विशद सिन्धु गुरु ने रची, पूजा श्रेष्ठ विशाल ।**
पार्श्वनाथ एवं गुरु, पद में नमन त्रिकाल ।।

ॐ ह्रीं निमोला अतिशय क्षेत्र स्थित श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- **अर्चा करते आपकी, पार्श्व प्रभू जिनराज ।**
यही भावना है 'विशद' सफल होय सब काज ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान पूजा (कचनेर)

स्थापना

चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ जी, हैं चिन्तित फल के दातार।
मंगलमय मंगलकारी जो, मंगल के पावन आधार ।।
अश्वसेन वामा देवी के, लाल कहाए जिन भगवान ।
विशद हृदय के सिंहासन पर, जिनका हम करते आह्वान।।

दोहा- **नाथ! आपके चरण में, रहे हमारा ध्यान ।**
अर्चा करते भाव से, पाएँ शिव सोपान ।।

ॐ ह्रीं कचनेर स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं कचनेर स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं कचनेर स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

भराया कूप से हमने नीर, चढ़ाते पाने भव का तीर ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चढ़ाते केशर युक्त सुगंध, कर्म का आश्रव होवे बंद ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, प्राप्त हो अक्षय पद भगवान ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्व .स्वाहा।

चढ़ाएँ पुष्प सुगन्धी वान, काम रुज की हो जाए हान ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वनायं पुष्पं निर्व .स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य विशेष, क्षुधा रुज होवे नाश अशेष ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

दीप अग्नीमय लिया प्रजाल, मोह का पूर्ण नशे जंजाल ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।

जलाते धूप से उठे सुवास, शीघ्र हों आठों कर्म विनाश ।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रायं अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व .स्वाहा ।

चढ़ाते फल ये खुशबूदार, प्राप्त हो मोक्षमहल का द्वार।
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व .स्वाहा ।

'विशद 'आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य
पूज्य कचनेर के पारसनाथ, झुकाते जिनके चरणों माथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व .स्वाहा।

सोरठा- **शांति का हो वास, जीवन में मेरे विशद ।**
होवे पूरी आश, नीर चढ़ाते भाव से ।।

।। शान्तये शांति धारा ।।

सोरठा- **पाएँ शिव सोपान, पुष्पांजलि करते विशद ।**
करते हम गुणगान, रत्नत्रय शुभ धर्म का ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

वैशाख कृष्ण द्वितिया महान, प्राणत से चयकर गर्भ आन ।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि पौष एकादशि को जिनेश, काशी नगरी जन्में विशेष ।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 2।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वदि पौष एकादशि सुतप धार, पद पाया तुमने अनागार।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 3।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णा एकादश्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ चैत कृष्ण की चौथ जान, प्रभु प्रगटाए केवल्य ज्ञान
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण चतुर्थी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण सुदि साते प्रातःकाल, शिवपद पाया प्रभु ने त्रिकाल।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजे भक्त आन ।। 5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **पार्श्वनाथ चिंतामणी, चिन्तित फल दातार ।**
जयमाला गाते यहाँ, करो प्रभू उद्धार ।।

(पद्धडि छन्द)

जय पार्श्वनाथ अरहन्त देव, जिन पद की करते देव सेव ।
सुत अश्वसेन के हैं जिनेश, वामा माँ जिनकी है विशेष ।।1।।
प्रभु नगर बनारस जन्म पाए तीनों लोकों में हर्ष छाए ।
सौधर्म इन्द्र तव नगर आय, अभिषेक मेरु पर जो कराय ।।2।।
फिर बढ़े आप ज्यों शुक्ल चंद, तुम मैट दिए सब द्वन्द्व फन्द।
गज पर चढ़कर के एक बार, गये शैर करन को जब कुमार।।3।।
तापस को देखा तपे घोर,पंचाग्नी का था जहाँ जोर ।
जिननाथ कहे तब सुनो भ्रात, बहु जीवों का मत करो घात।।4।।

तपसी तब मन में कोप धार, क्यों ज्ञान सिखावत तू कुमार ।
तपसी तब बोला कहाँ जीव, जलते दिखलाए नाग सजीव ।।5।।
प्रभु मंत्र सुनाए णमोकार, वह नाग देव गति पाए सार ।
प्रभु ने संसार असार जान, संयम धारा अतिशय महान ।।6।।
फिर किए आप एकाग्र ध्यान, तब कमठासुर ने वहाँ आन ।
प्रभु से पूरव का बैर मान, मन में बदले की लई ठान ।।7।।
उपसर्ग किया तब वहाँ घोर, जल अग्नि आंधि का किया जोर।
तब शांत भाव धारे जिनेश,धरणेन्द्र युगल आये विशेष ।।8।।
प्रभु को पदमावती शीश नाय, नागेन्द्र छत्र फण का बनाए ।
तब झुका चरण में दुष्ट आन, प्रगटाए प्रभु केवल्य ज्ञान ।।9।।
श्री स्वर्ण भद्र जी तीर्थराज, से पाए प्रभु जी शिव समाज ।
औरंगाबाद महाराष्ट्र जान, कचनेर ग्राम अति शोभमान ।।10।।
कहते वहाँ आती एक गाय, जो दूध झराती वहाँ आय।
है सेठ वहाँ सम्मत सुराय, उनकी दादी को स्वप्न आय।।11।।
मूर्ति को तुम बाहर कराव, जिन पार्श्वनाथ के दर्श पाव ।
खण्डित मूर्ति हो गई जान, गर्दन से खण्डित हुई मान ।।12।।
यह करें विसर्जित कूप माहिं, नई मूर्ति प्रतिष्ठा भी कराएँ।
श्री श्रेष्ठि राज ये स्वप्न पाय, घी बूरा में मूर्ती रखाय।।13।।
तब लक्ष्मी राज यह किए कार्य, शुभ हुआ वहाँ पर चमत्कार ।
ऐसा कहते हैं वहाँ लोग, जो पाप करे वह पाए रोग ।।14।।

दोहा- **अर्चा कर जिन पार्श्व की, इच्छित फल को पाए ।**
रोग शोक दुख मैटकर, निज सौभाग्य जगाय ।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र कचनेर स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ ।**
विशद भाव से आपके, चरण झुकाते माथ ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर स्वामी पूजा (चाँदनपुर)

स्थापना

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, केवल ज्ञान जगाए हैं।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, सुखानन्त प्रगटाए हैं।।
महावीर प्रभु चाँदनपुर के, मेरे उर में वास करो।
भक्त आपके द्वारे आए, उनकी पूरी आस करो ।।

दोहा- **तीन लोक के नाथ हैं, महावीर भगवान ।**
विशद हृदय में आइये, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर स्वामिन्। अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर स्वामिन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर स्वामिन्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

द्रव्य भाव नो कर्म मलों से, दूषित हम होते आये ।
कर्म कलंक मिटाने को यह, नीर चढ़ाने हम लाये।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव के भावविभावों में, जलते मरते हम आये हैं।
चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाकर अब, संताप नशाने आये हैं।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

है सिद्ध प्रभु का अक्षय पद, वह पद हमको अब पाना है।
अक्षत यह चढ़ा रहे अनुपम, ना और जगत भटकाना है।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.स्वाहा।

विषधर यह विषय वासना से, भव- भव से डसते आये हैं।
हे विषहर निर्विष हमें करो, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

हम भक्ष्याभक्ष्य सभी खाते, हैं क्षुधा रोग के अकुलाये।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा रोग , हरने हे नाथ! शरण आए ।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

हम अज्ञान अंधेरें में भटके, न मोह दूर कर पाए हैं।
यह दीप जलाकर हम कृत्रिम, अज्ञान नशाने आए हैं।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

चेतन कर्मों से हुआ मलिन, यह कर्म नहीं जल पाए हैं।
अब धूप जलाकर अग्नी में, यह कर्म जलाने आए हैं।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदाहनाय धूपं नि.स्वाहा।

संसार सुखों की आशा में, हम धर्म कर्म विसराये हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने हम, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

महिमा अनर्घ पद की हमने, ना कभी आज तक जानी है।
अब पद अनर्घ पाएगें हम,मन में अपने यह ठानी है।।
हे वीर प्रभु चाँदनपुर के, हम तुम्हें भाव से ध्याते हैं।
अब पूर्ण कामना करो नाथ, प्रभु पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चाँदनगाँव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- **विशद शांति पाने चरण, देते शांतीधार।**
हम भक्तों को भक्ति है, मात्र एक आधार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा - **पुष्पांजलि करते विशद, नाथ! आपके द्वार।**
भाते हैं यह भावना, मिटे भ्रमण संसार।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चरणों का अर्घ

टीले से महावीर प्रभु जी, प्रगट हुए अन्तर्यामी।
चरण चिन्ह छतरी में सोहें, हुए प्रभु जी शिवगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा आज रचाते हैं।
भक्ति भाव से नाथ आपके,, चरणों शीश झुकाते हैं।।
दोहा- चमत्कार दिखलाए हैं, महावीर भगवान।
सुख शांति सौभाग्य हो , करते हम गुणगान ।।

ॐ ह्रीं चरण छतरी स्थित श्री महावीर चरणाभ्यां अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं नि. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ

चौपाई

छठ आषाढ़ शुक्ल मनहारी, गर्भ में आए थे त्रिपुरारी ।
तीर्थंकर पदवी को पाए, महावीर भगवान कहाए ।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला षष्ठयां गर्भमंगल मंडितायश्री महावीर जिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तेरस कहलाए, जन्म प्रभू मंगलमय पाए।
तीर्थंकर पदवी को पाए, महावीर भगवान कहाए ।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म मंगलमंडितायश्री महावीर जिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी शुभ जानो, संयम धारे प्रभु जी मानो।
तीथंकर पदवी को पाए, महावीर भगवान कहलाए ।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष दशम्यां तपोमंगल मंडितायश्री महावीर जिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें शुक्ल वैसाख सुहानी, बने प्रभू जी केवल ज्ञानी ।
तीर्थंकर पदवी को पाए, महावीर भगवान कहलाए ।।4।।

ॐ ह्रीं वैसाख शुक्ला दशम्यां केवलज्ञान मंडितायश्री महावीर जिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण अमावश गाई, वीर प्रभू ने मुक्ती पाई।
तीर्थंकर पदवी को पाए, महावीर भगवान कहलाए ।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्ण अमावस्यां मोक्ष मंगलमंडितायश्री महावीर जिनेन्दाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **भक्त पुकारें आपको, आके बालाबाल ।**
पूर्ण करो प्रभु कामना, गाते हम जयमाल ।।
मेरे हृदय कमल में आन, विराजो महावीर भगवान ।।टेक।।

स्वर्ग से चय प्रभु गर्भ में आए, रत्न वृष्टि शुभ देव कराए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो महावीर भगवान।।1।।
जन्म वीर प्रभु ने जब पाया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।
जग में हुआ सुमंगलगान – विराजो महावीर भगवान।।2।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, भोग त्याग कर दीक्षा पाए।
तुमने पाए पंचकल्याण– विराजो महावीर भगवान ।।3।।
कर्म घातिया तुमने नाशे, पावन केवल ज्ञान प्रकाशे।।
पाए क्षायिक केवलज्ञान– विराजो महावीर भगवान ।।4।।
ॐकार मयी प्रभु की वाणी, जग जीवों की है कल्याणी।
सारे जग में रही महान– विराजो महावीर भगवान ।।5।।
पावापुर सरवर से स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी ।
तुमने पाया पद निर्वाण – विराजो महावीर भगवान ।।6।।
चाँदनपुर में टीला गाया, जिस पे गाय ने दूध झराया।
खोदा ग्वाले ने जो आन– विराजो महावीर भगवान ।।7।।।
महावीर की प्रतिमा प्यारी, प्रगट हुई शुभ मंगलकारी।।
मिलकर किये सभी यशगान– विराजो महावीर भगवान।।8।।
भक्त द्वार पर जो भी आते, उनके प्रभु सौभाग्य जगाते।
होता जीवों का कल्याण– विराजो महावीर भगवान।।9।।

दोहा– **विशद ज्ञान धारी हुए, महावीर भगवान।**
इच्छित फल पाते सभी, जो करते गुणगान ।।

ॐ ह्रीं चांदनगांव स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

दोहा– **आशा लेकर आए हैं, नाथ आपके द्वार ।**
भक्ती करते भाव से, करो शीघ्र उद्धार ।।

।। इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अष्टाह्निका पर्व पूजन

स्थापना

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, आयू नाम गोत्र अन्तराय ।
अष्ट कर्म से बद्ध जीव यह, काल अनादी जगत भ्रमाय ।।
आठों कर्म विनाश आठ गुण, पा लेते हैं श्री जिन सिद्ध ।
अकृत्रिम श्री जिनगृह शास्वत, तीन लोक में रहे प्रसिद्ध ।।

दोहा- **पर्व अढ़ाई में विशद, सिद्धों का आह्वान ।**
करते हैं हम भाव से, पाने शिव सोपान ।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

परिशुद्ध प्रभो! यह निर्मल जल, हम चरण चढ़ाने को लाए ।
निर्मम ममता से पीड़ित हो, हे नाथ! शरण में हम आए ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा

हे नाथ ! मेरा क्रोधानल से, चेतन अनादि से जलता है ।
अज्ञान तिमिर के आँचल में, जो छिपकर खुश हो पलता है ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.स्वाहा।

हम विमुख हुए निज भावों से, तन मन धन अपना मान लिया।
ना ध्यान किया अक्षय निधि का, निज का न कभी श्रद्धान किया ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान नि.स्वाहा ।

चैतन्य सुरभि का उपवन भी, जलता है काम की ज्वाला से।
हो जाए काम बली वश में, चैतन्य गुणों की माला से ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत , शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा ।

है क्षुधा देह का धर्म विशद, जो तृष्णा भाव जगाता है ।
जो रमण करे चेतन गुण में, वह तृप्त स्वयं हो जाता है ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।5।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा

हे वीतराग मय वैज्ञानिक, शास्वत प्रयोग शाला पाए ।
तुम ज्ञान ध्यान में लीन हुए, केवल्य ज्ञान शुभ प्रगटाए।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।6।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह मोहान्धकार विनाशय दीपं नि.स्वाहा ।

प्रासाद महकता है अनुपम, हे नाथ! आपका धूपों से ।
तुम निज स्वरूप में लीन हुए, हो गये विरत सब रूपों से।।

यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।7।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा ।

उपवन में आप शिवालय के, रहकर मुक्तीफल चखते हैं।
सुरतरु के फल भी हों समक्ष, फिर भी कोइ आस ना रखते हैं।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।8।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि.स्वाहा ।

निज अन्तर वैभव की मस्ती, हे नाथ ! स्वयं हम भी पाएँ ।
सब अर्घ्य त्याग पाके अनर्घ्य, हम सिद्ध शिला पर जम जाएँ ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध ,कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **चिन्मय हे चिद्रूप जिन, तीनों लोक प्रसिद्ध।**
देते शांती धार पद, पाने अनुपम सिद्ध ।।

।।शांन्तये शांतिधारा।।

दोहा- **चिर विलास चैतन्य में, चिर निमग्न भगवन्त।**
पुष्पाजंलि करते प्रभो! पाने भव का अंत ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

अर्घ्यावली

अधोलोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
आठ सौ तैंतीस कोटि छियत्तर, लाख रहे जिनबिम्ब महान।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर ।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर ।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके सप्त कोटि द्वासप्तति लक्ष जिनालयस्थ अष्ट शत त्रयत्रिंशत कोटि षट् सप्ततिलक्ष जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

मध्यलोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ

चार सौ अट्ठावन हैं जिनगृह, मध्यलोक में अपरम्पार ।
जिन प्रतिमाएँ सात सौ छत्तिस, कम हैं पंचाशत हज्जार ।।
कृत्रिम जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भी हम पूजें भाव विभोर ।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर ।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अष्ट पंचाशदधिक चउशत जिनालयस्थ चतु षष्ठी अधिक शत चतु सहस्र जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

ऊर्ध्व लोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ

लाख चुरासी सहस सत्यानवे, और तेईस जिनगृह शुभकार ।
कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस अठत्तर अरु सौ चार।।
अधिक चुरासी जिन प्रतिमाएँ, पूज रहे हो भाव विभोर ।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर ।।3।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोके त्रयोविंशति अधिक सप्त नवति सहस्र चतुरसीति लक्ष जिनालयस्थ एक नवति कोटि षट् सप्ततिलक्ष अष्ट सप्तति सहस्र चउ शत चतुरशीति जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

आठ कोटि अरु लाख सु छप्पन, सहस्र सत्यानवे अरु सौ चार।
इक्यासी हैं जिनगृह पावन, तीन लोक में मंगलकार ।।
नौ सौ पच्चिस कोटि सु त्रेपन, लाख और सत्ताइस हजार ।
नौ सौ अड़तालिस प्रतिमाएँ, पूज रहे हम मंगलकार ।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक मध्ये अष्ट कोटि षट् पंचाशत लक्ष सप्त नवति चउ शत एकाशीति जिनालयस्थ नव शत पंचविंशति कोटि त्रि पंचाशत लक्ष सप्त विंशति सहस्र नव शत अष्ट चत्त्वारिंशत जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

तीन लोक के शीर्ष पे अनुपम, सिद्ध शिला स्वर्णाभावान ।
सिद्ध अनन्तानन्त परम सुख, में रत रहते लीन महान ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर ।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर ।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक त्रिलोकोपरि ईषत प्राग्भार भूमि (उपरि) स्थित अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- **नित्य निरंजन ज्ञानमय, त्राता आप त्रिकाल ।**
चिर निमग्न चैतन्य में, गाते हम जयमाल ।।

।। छन्द पद्धरि ।।

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्यात्व मल्ल पर कर प्रहार ।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व सुरवि कीन्हा प्रकाश।।1।।
तन चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान ।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान ।।2।।
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार ।
तप अनशन आदिक बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार।।3।।
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान ।
एकाकी निर्भय निः सहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय ।।4।।
कर्मों का संवर किये नाथ!, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबंधी चउ कषाए, विसंयोजन का कीन्हा उपाय।।5।।
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार ।
चारों कर्मों का कर विनाश, केवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश ।।6।।
नव केवल लब्धी आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार ।
कर सूक्ष्म प्रतिपाती सुध्यान, चारों अघातिया कर समान ।।7।।

अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवल अयोग ।
करके अघातिया कर्मनाश, शिवपुर में कीन्हे आप वास ।।8।।
शास्वत शुभ पर्वअठाई जान, सुदि आठें से पूनम चले मान ।
जो कार्तिक फाल्गुन षाढ़ मास, में करे कोई व्रत या उपास।।9।।
सुर नंदीश्वर शुभ दीप जाँय, नर सिद्धों की पूजा रचाएँ ।
जो करते हैं पूजा विधान, श्री जिन बिम्बों की शरण आन ।।10।।

(घत्ता छन्द)

हे लोक प्रकाशी शिवपुर वासी, अविनाशी पद में वंदन ।
हे जिन संन्यासी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी अभिनन्दन ।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा ।

दोहा- **तीन लोक चूड़ामणि, आप त्रिलोकी नाथ।**
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

बाहुबली स्वमी की आरती

ॐ जय बाहुबली स्वामी, प्रभु बाहुबली स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, बनें मोक्षगामी।। ॐ जय..।।टेक।।
तीर्थंकर के पुत्र कहाए, चक्री के भाई।
कामदेव पद तुमने पाया, शुभ मंगलदायी।। ॐ जय..।।1।।
भ्रात भरत से युद्ध हुआ तब, विजय प्राप्त कीन्हें।
छह खण्डों का राज्य भरत को, आप सौं दीन्हें।। ॐ जय..।।2।।
एक वर्ष तक खड्गासन में, तुमने ध्यान किया।
निराहार हो निजानन्द का, शुभ आनन्द लिया।। ॐ जय..।।3।।
चक्रवर्ती ने चरणों आकर, संदेशा दीन्हा।
वसुधा काहू की न स्वामी, क्यों विकल्प कीन्हा।। ॐ जय..।।4।।
निर्विकल्प हो तुमने स्वामी, अतिशय ध्यान किया।
विशद ज्ञान को पाया क्षण में, शिवपुर वास किया।। ॐ जय..।।5।।

रविव्रत पूजन

स्थापना

हे पार्श्वनाथ! करुणानिधान, तुमने करुणा का दान दिया।
जो दीन दुखी हैं इस जग में, उनको शिव सौख्य प्रदान किया।।
एक श्रेष्ठी रत्न मती सागर, ने भक्ति का फल पाया है।
शुभ रविवार का व्रत करके, निज का सौभाग्य जगाया है।।
हम भाव सहित प्रभु गुण गाते, अरु पद में करते हैं अर्चन।
निज हृदय कमल में तिष्ठाने, करते हैं तव प्रभु आह्वानन।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा- **जल की धारा दे रहे, चरणों में हे नाथ!।**
जन्म जरादिक नाश हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चन्दन चरणों चर्चने, आये हम हे नाथ!।
भव आताप विनाश हो, चरण झुकाते माथ।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के प्रभु, भर लाये हम थाल।
अक्षय पद पाने चरण, पूजा करें त्रिकाल।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि. स्वाहा।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर आये साथ।
कामबाण विध्वंस हों, तव चरणों में माथ।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
क्षुधारोग विध्वंस हो, चरण झुकाते माथ।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

घृत का अनुपम दीप यह, हाथों लिये प्रजाल।
मोह अंध का नाश हो, चरण झुकाते भाल।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप यह, खेते अपरम्पार।
अष्टकर्म का नाश हो, वंदन बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे हम भाव से, ताजे फल रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, भवदधि पावे पार।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, लेकर द्रव्य अनेक।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त शुभ, यही भावना एक।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - **रविवार व्रत के दिना, करें पार्श्व गुणगान।**
जलधारा देते चरण, पाने सौख्य महान्।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा - **अर्पित करते चरण में, पुष्पों का यह हार।**
गुणगानें से पार्श्व के, मिले मोक्ष उपहार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा - **अर्चा के शुभभाव से, वंदन करें त्रिकाल।**
रविव्रत पूजा की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

उपसर्ग परीषह में तुमने अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ! पुकारा है।।
ओले-शोले पत्थर-पानी, दुष्टों ने तुम पर वर्षाये।
तब श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रू पद नाये।।

तुमने तन चेतन का अंतर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप तुमने पाया।।
यह संयम की शक्ती मानो, उपसर्ग प्रभु जी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिये, हर बाधाओं से खेले हैं।।
सब रागद्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पायी है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है।।
तुम सर्वशक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीनदुखी द्वारे आते, उनके सारे दुख हरते हो।।
इक सेठ मतिसागर जानो, जो मन से अति दुखियारा था।
जो अशुभ कर्म के कारण से, निज सुत वियोग का मारा था।।
पा पुत्र एक शुभ होनहार, जो परदेशों में भटका था।
सुधि भूल गया था निज घर की, जो माया-मोह में अटका था।।
तब सेठ ने रविव्रत पूजा कर, शुभ पुण्य सुफल को पाया था।
वह पुत्र प्राप्त करके अपना, अतिशय सौभाग्य जगाया था।।
जो चरण शरण प्रभु की पाके, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
व्रत धारण कर पूजा करके, बहु सौख्य संपदा पाते हैं।।
जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं।।
जिसपद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
जो भवि जीवों के लिये शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है।

दोहा- **रविव्रत को जिन पार्श्व की, पूजा करें विशेष।**
सौख्य संपदा प्राप्त कर, पावें निज स्वदेश।।

ॐ ह्रीं रविव्रत व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत के दिन पार्श्व को, पूजें जो भी लोग।
सुख शान्ति आनन्द पा, पावे शिव का योग।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्य विशदसागर जी पूजन

(स्थापना)

वीर प्रभु के अनुयायी तुम, विशद सिंधु आचार्य प्रवर।
विराग सिंधु से दीक्षा पाए, हम सबके तुम हो गुरुवर।।
इन गुरु शिष्य की गरिमा से यह, हर्षाया सारा अम्बर।
परम पूज्य गुरुवर का अनुपम, जयकारा गूंजा घर-घर।।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करें स्थापना हम तेरी।।

ॐ हूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

गंगा में डुबकी लगा-लगा, अपने को पावन बतलाया।
अब कर्म कलंक मिटाने को, गुरु चरणों में जल ले लाया।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।1।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागरमुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

गुरुवर की पूजा से सचमुच, हृदय कली मम् खिल जाती।
चन्दन से पूजा भवाताप को, दूर हटा सुख दिलवाती।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।2।।

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु शुभ, जहाँ से गुरु के कदम बढ़े।
उस जनम क्षेत्र के कण-कण को, मेरे यह अक्षत पुंज चढ़े।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।3।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

बागों से चुन-चुनकर सुरभित, पुष्पों के थाल सजाए हैं।
निज काम बाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण शरण में आए हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।4।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, यह शुभ पकवान बना लाए।
अब निज की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने को आये।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।5।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

हम रत्न जड़ित घृत के दीपक, यह चरण शरण में लाये हैं।
मिट जाये अब अज्ञान तिमिर, गुरु चरणों में हम आये हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।6।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि स्वाहा।

शुभ धूपदान में धूप जलाएँ, दश दिश धूप उड़े भारी।
बहु जनम-जनम के संचित भी, कर्मों की पूर्ण जले क्यारी।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।7।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

शुभ मोक्ष सुफल की चाह में गुरु ने, नग्न दिगम्बर व्रत पाया।
प्रभुवर के बनकर लघुनन्दन, शुभ मोक्ष मार्ग को अपनाया।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।8।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ती हम कर सकते बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।9।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **विशद गुरु की भक्ति है, मम जीवन आधार।**
युगों–युगों तक हम नहीं, भूलेंगे उपकार।।

चौपाई

जयवंतों गुरुदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।1।।
ग्राम कुपी जग में अलबेला, नाथूराम घर लगा था मेला।
माँ इंदर के प्यारे नंदा, अपने घर के तुम हो चंदा।।2।।
नाम रमेश आपका गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
आप गये गुरुवर के द्वारे, छोड़ के जग के सभी सहारे।।3।।
बचपन से ही तुमने पाया, महामंत्र नवकार को ध्याया।
तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।।4।।
श्रद्धा से फिर शीश झुकाया, विराग सिन्धु को गुरू बनाया।
सन् छियानवे में दीक्षा पाई, आप बने फिर शिव के राही।।5।।
धन्य द्रोणगिरि कीन्हें गलियाँ, खिलीं त्याग संयम की कलियाँ।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हो रखवाले।।6।।
मालपुरा में टोंक जिला है, गुरुवर का सौभाग्य जगा है।
बसंत पंचमी का दिन पाये, भरत सिन्धुजी गुरुवर आये।।7।।
परमेष्ठी आचार्य कहाए, विशदसिन्धु आचार्य कहा।
तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे।।8।।

पंचाचार आपने धारे, षट् आवश्यक पालन हारे।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी।।9।।
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।
गुरुकृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते।।10।।
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जायें सहारे।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्त जनों के किये हवाले।।11।।
गुरु के सम्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।
दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरु कृपा जब रंग दिखाती।।12।।
हम धरते हैं ध्यान तुम्हारा, जानो सब मन्तव्य हमारा।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, गुरु गुण को मैं कैसे बोलूँ।।13।।
स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, निज दुख की परवाह नहीं है।
गुरु की भक्ति जो भी करते, कोष पुण्य से वो हैं भरते।।14।।

दोहा – **सपना हो साकार यह, पूरी मन की आश।**
मुक्ती के राही बनें, शिवपुर में हो वास।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अहोभाग्य है मेरा गुरुवर, दर्श करें दो नयनों से।
विशद गुरु का गुण गाएँ हम, तन से मन से वचनों से।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

– संघस्थ ब्र. सपना दीदी

आचार्योपाध्याय–सर्व साधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपद के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
विशद भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथाचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, बहु संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर अधोलोक में महति महान।
चार सौ अट्ठावन अकृत्रिम, मध्य लोक में जिनगृह मान।।
लख चौरासी सहस सत्तावन तेइस ऊर्ध्व में श्री जिनधाम।
असंख्यात ज्योतिश व्यन्तर के जिनगृह को है विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल हो शुभकार।
विशद कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रि-चैत्यालय सम्बन्धित जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्यं

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री पदमप्रभु का अर्घ्य

निर्मल भावों का जल लेकर, चन्दन विनय भाव के साथ।
अक्षत भक्ति भाव के लेकर, पुष्प सजाकर लाए हाथ।।
निज गुण का नैवेद्य बनाया, ज्ञान दीप ले मंगलकार।
अष्ट कर्म की धूप जलाए, जिन अर्चा का फल शुभकार।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाने, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।
विशद भाव से पद्य प्रभु का, आज यहाँ करते गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्यं

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विषद, पाए! सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

अर्घ्यं चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ।
यही भावना विषद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें, शीघ्र शिवसुन्दरी नाथ हम भी वरें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले, अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

कर्मो का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो! न पार इसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू यह अर्घ्य करें पद में अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

यह अर्घ्यं चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पददायी।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, इसको बिसराया।।
हैं पंचमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर द्वीप का अर्घ्य

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्- जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अनर्घपदप्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठों द्रव्यों का अर्घ्यं, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मो की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम इसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ है पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

पावन यह अर्घ्यं बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें निज सम्यक ज्ञान जगाए!।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तऋर्षि का अर्घ्य

मन वचन काय को अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतु, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
हम सप्तऋर्षी की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जगाएँगे।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निव.स्वाहा।

आचार्य श्री का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पद्मावती का अर्घ्य

किया घोर उपसर्ग कमठ ने, पार्श्व प्रभु थे ध्यानालीन।
शीश पे धारा पद्मावती ने, चरणों झुका कमठ हो दीन।।

जन-जन की रक्षाकारी है, पद्मावती हो आप महान।
अर्घ्य समर्पित विशद भाव से, करके करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं जिनशासन रक्षिका धरणेन्द्रभार्या पद्मावती देवी अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

समुच्चय महाअर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रि जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, विशद पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पंचममेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महाअर्घ्यं यह नाथ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा- जल गंधक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्मो नमः। दर्शन-विशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन- सम्यगज्ञान-सम्मक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्मो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्मो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपौरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा,

चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर, नारनौल आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे ..... देश ..... प्रान्ते .....नाम्नि नगरे .....मासानामुत्तमे ..... मासे शुभ पक्षे.... तिथौ... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक- श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठं

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नमन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादि से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांति जिन! श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादि कुण्डल किरीटधार, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन!, हमको शांति करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक मतिवर, राजा प्रजा राष्टं शुभदेश।
विषद शांति दो सबको हे जिन!, यही हमारा है उद्देश।।
होम सुखी नरनाथ धर्मधार, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाती कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादि जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हे शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढाँकते जाए!, गुण सदाचार के गाए!।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाए!, तब तक चरणों में आए!।।
तव पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा– वर्ण अर्थ पद मात्रा में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाए! विशद, हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर–नर–विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाए अपने देश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आशिका लेने का पद

(दोहा)

पूजा कर आराध्य की, धारें आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाए जिन! आशीष।।

।। कायोत्सर्ग करें।।

चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ ।
तीर्थंकर चौबीस के ,चरण झुकाते माथ ।।
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकर ।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार ।।

।।चौपाई ।।

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे।। 1।।
देव-शास्त्र -गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी ।।2।।
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी ।। 3।।
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें ।। 4।।
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी ।।5।।
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ ।।6।।
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें ।।7।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी ।।8।।
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई ।। 9।।
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी ।। 10।।
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें ।।11।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई।।12।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी।।13।।
दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी ।। 14।।
ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो ।। 15।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ ।। 16।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता ।।17।।
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी ।।18।।
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें ।।19।।

जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें ।। 20।।
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धी धारी ।। 21।।
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें ।। 22।।
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धी हल्की वाली ।।23।।
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी ।।24।।
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी ।। 25।।
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए ।। 26।।
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी ।।27।।
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी ।। 28।।
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे ।।29।।
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी ।। 30।।
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें।। 31।।
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें ।। 32।।
आशीरविष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी ।।33।।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धी मुनि पावें ।। 34।।
जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीविष ऋषिवर अनगारी ।।35।।
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें ।। 36।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो।। 37।।
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें ।।38।।
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी।।39।।
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस यह , पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ।।
दुख दारिद को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः।

टोंक नसिया के श्री आदिनाथ भगवान का चालीसा

दोहा- पूज्य रहे नवदेवता, तीर्थंकर चौबीस।
कृत्रिमा-कृत्रिम चैत्य पद, झुका रहे हम शीश।।
प्रगटे हैं भूगर्भ से, श्री जिनबिम्ब महान।
ऋषभादिक जिनराज का, करते हम गुणगान।।

चौपाई

प्रभु आकाश अनन्त बताया, लोक मध्य में जिसके गाया।।1।।
छह द्रव्यों संयुत शुभकारी, भरा हुआ है मंगलकारी।।2।।
जम्बूद्वीप मध्य में सोहे, मेरु मध्य में मन को मोहे।।3।।
सप्त क्षेत्र जिसमें बतलाए, भरतक्षेत्र दक्षिण में आए।।4।।
मध्य में आर्यखण्ड शुभ जानो, आर्य सभ्यता जिसमें मानो।।5।।
भरत क्षेत्र है जिसमें भाई, भारत देश रहा सुखदायी।।6।।
आदिनाथ आदीश्वर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।7।।
धर्म प्रवर्तक आप कहाए, षट् कर्मों का ज्ञान कराए।।8।।
सर्वार्थसिद्धि से चयकर आए, जन्म अयोध्या नगरी पाए।।9।।
नाभिराय के पुत्र कहाए, मरुदेवी माताजी पाए।।10।।
तृतिय काल का अंत कहाया, जन्म आपने भू पर पाया।।11।।
स्वर्ग से इन्द्रराज तब आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।।12।।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।।13।।
अनुक्रम से प्रभु वृद्धी पाए, आप स्वयं युवराज कहाए।।14।।
न्याय पूर्वक राज्य चलाए, जन-जन के तुम मन को भाए।।15।।
असि मसि कृषि वाणिज्य की भाई, शिल्प कला शिक्षा दिलवाई।।16।।
अंक वर्ण विद्या का जानो, ज्ञान सिखाया प्रभु ने मानो।।17।।
पूरब त्रेसठ लाख बिताए, भोगों में ही समय गँवाए।।18।।
नीलञ्जना का नृत्य कराया, मरण देख वैराग्य जगाया।।19।।

भरत बाहुबलि को बुलवाया, उनका राजतिलक करवाया।।20।।
वन में जाकर दीक्षा पाए, छह महीने का ध्यान लगाए।।21।।
फिर आहार की मन में आई, विधि छह माह नहीं मिल पाई।।22।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, उसने यह सौभाग्य जगाया।।23।।
आदिराज मुनि को पड़गाया, इक्षू रस आहार कराया।।24।।
सहस वर्ष का समय बिताए, तपकर केवलज्ञान जगाए।।25।।
धनद इन्द्र की आज्ञा पाया , उसने समवशरण बनवाया।।26।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, सुपद भ्रष्ट सब दीक्षा पाए।।27।।
अष्टापद पर पहुँचे स्वामी, हुए जहाँ से अन्तर्यामी।।28।।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, टोंक जिला अतिशय बतलाया।।29।।
महावीर मार्ग पे नसिया गाई, संत भवन है पीछे भाई।।30।।
भादों सुदि तेरस को मानो, सम्वत् बीस सौ दस पहिचानो।।31।।
छब्बिस प्रतिमाएँ शुभकारी, प्रगटीं अतिशय मंगलकारी।।32।।
छतरी श्रेष्ठ वहाँ बनवाई, चरण पादुका भी पधराई।।33।।
मंदिर शुभ निर्माण कराए, वेदी में जिन को पधराए।।34।।
मूलनायक आदीश्वर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।35।।
दूर-दूर से यात्री आते, दर्शन करके खुश हो जाते।।36।।
जिन प्रतिमा है अतिशयकारी, धवल रंग की शुभ मनहारी।।।37।।
मानस्तम्भ सामने आए, जो मानी का मान गलाए।।38।।
श्रद्धा से जो चरणों आए, वह अपना सौभाग्य जगाए।।39।।
सुख शांती इच्छित फल पाए, 'विशद' ज्ञान पा शिवपुर जाए।।40।।

दोहा- पढ़ें भाव के साथ जो, चालीसा चालीस।
श्रद्धा भक्ती भाव से, चरण झुकाए शीश।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन-सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

बाड़ा पद्मपुरा के श्री पद्मप्रभु भगवान चालीसा

दोहा- नव देवों को नित नमूँ , नव कोटि के साथ ।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करो , झुका रहे हम माथ ।।
पदमपुरा के पदम प्रभु, करो मेरा कल्याण ।
चालीसा पढ़ते यहाँ, पाने शिव सोपान ।।

(चौपाई)

जय श्री पदम प्रभू गुणधारी , आप जगत में मंगलकारी ।।1 ।।
पिता धरण के राज दुलारे, मात सुसीमा के हो प्यारे ।।2 ।।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी , जन्में जिस भू पे त्रिपुरारी ।।3 ।।
ढाई शतक धनु ऊँचे गाये, लाल वर्ण सुन्दर तन पाएँ।।4 ।।
छठवे तीर्थंकर कहलाये, पंचकल्याणक इन्द्र मनाये।।5 ।।
चार घातियाँ कर्म नशाये, तत्क्षण केवलज्ञान जगाये।।6 ।।
छियालीस मूल गुणों के धारी, आप हुये जग जन हितकारी।।7 ।।
धनद भक्ति से चरणों आया, सुन्दर समवशरण बनवाया।।8 ।।
द्वादश धर्म सभा अति प्यारी, धनपति इन्द्र रचावन हारी।।9 ।।
जनम जात वैरी जहाँ आये, वैर छोड़ मैत्री अपनाये।।10 ।।
तीस हजार तीन लख जानो, समवशरण में साधु जानो।।11 ।।
बीस हजार चार लख भाई, आर्यिकाओं की संख्या गाई।।12 ।।
एक सौ दस गणधर बतलाये, वज्रवमर पहले कहलाये।।13 ।।
सुरनर पशु त्रय गति के प्राणी, आकर सुनते हैं जिनवाणी।।14 ।।
कोई सत् श्रद्धान जगाते, कोई देश व्रतों को पाते।।15 ।।
कोई मुनि की दीक्षा पाते, कोई केवलज्ञान जगाते।।16 ।।
क्षायिक नव लब्धि के धारी, पाके होते शिव भर्तारी।।17 ।।
अपने सारे कर्म नशाते, फिर वे शिव पदवी को पाते।।18 ।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आये, मोहन कूट से शिवपद पाये।।19 ।।

विश्व विख्यात क्षेत्र जो गाया, मन्दिर गोलाकार बताया।।20।।
पद्मपुरा है अतिशयकारी, पद्मप्रभु की मूर्ति प्यारी।।21।।
दूर-दूर से यात्री आते, मनवांछित फल प्राणी पाते।।22।।
दुखिया दर पे दुःख मिटावे, निर्धन धन इच्छित पा जावे।।23।।
नाम आप का संकट हारी, ध्यान जाप है मंगलकारी।।24।।
भूतप्रेत व्यंतर बाधाएँ, शाकिन डाकिन की पीड़ाएँ।।25।।
परकृत मंत्र तंत्र दुख कारी, मिट जाती हैं पीड़ा सारी।।26।।
कर्म असाता उदय में आये, कोई असाध्य बीमारी आये।।27।।
कैंसर हृदय रोग हो भारी, फैली हो दुर्दम दुर्मारी।।28।।
जल वृष्टि हो प्रलय मचाये, या दुस्काल भयानक आये।।29।।
ज्ञान योग में बाधा आये, विद्या अभ्यास बिना हो पाये।।30।।
यश मिलते-मिलते रह जाये, रविग्रह पीड़ा सतत सताये।।31।।
या परिश्रम निस्फल जाये, रोजगार भी न चल पाये।।32।।
राजा मंत्री आदि सतावे, कर्मचारी भी दुख पहुँचावे।।33।।
पद्मप्रभु पद पूज रचावे, भाव सहित चालीसा गावे।।34।।
सब कष्टों से मुक्ती पावे, सुख शान्ति सौभाग्य जगावे।।35।।
वास्तु दोष की हो बाधाएँ, ज्योतिष आदि की पीड़ाएँ।।36।।
सुर नर पशुकृत वैर कहाये, उनसे पूजा मुक्ती दिलाये।।37।।
यात्रा वाहनकृत बाधायें, भूकंप आदिक की शंकायें।।38।।
अनायास ही यदि सताये, नाश होय जिन प्रभु को ध्याये।।39।।
पद्म प्रभु हैं संकटहारी, जिन पद में ढोक हमारी।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े पढ़ावे जीव।
पद्मप्रभु के चरण में, जागे पुण्य अतीत।।
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
जीवन हो सुख शान्तिमय, 'विशद' पूर्ण हो आश।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हम् बाड़ाग्राम स्थित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

मैंदवास के श्री चन्द्रप्रभु जी का चालीसा

दोहा – नमन करे अरहंत पद, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योंपाध्याय साधु का, करते हम गुणगान।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, प्रतिमाएँ जिन धाम।
मेंदवास के चन्द्रप्रभु, के पद विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जय जय चन्द्रप्रभु जिन स्वामी, कीर्ति आपकी त्रिभुवन गामी।।1।।
तुम हो प्रभु देवों के देवा, सुर नर करें चरण की सेवा।।2।।
मुद्रा जिनकी है अविकारी, दिखती है जो अति मनहारी।।3।।
महासेन के राज दुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।4।।
जन्मे चन्द्रपुरी में स्वामी, नगरी जो अतिशय अभिरामी।।5।।
पौष वदी एकादशि जानो, जन्म लिए चन्द्रप्रभु मानो।।6।।
आयू लाख पूर्व दश पाई, धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई।7।।
तड़ित चमकता देखे स्वामी, संयम धर बने शिवगामी।।8।।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।9।।
प्रभु सम्मेद शिखर पे आए, ललित कूट पे ध्यान लगाए।।10।।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी पाए, कर्मनाश कर मुक्ती पाए।।11।।
समन्तभद्र मुनिवर अविकारी, जिनको हुई भस्म बिमारी।।12।।
जो ब्राह्मण का भेष बनाए, शिव जी के मंदिर में आए।।13।।
राजा मुनि के पास में आए, मुनिवर ने उसको समझाया।।14।।
हे! राजन इक बात बताएँ, महादेव को भोग खिलाए।।15।।
प्रतिदिन उत्तम भोजन आवे, समन्तभद्र छुपकर के खावे।।16।।
इस प्रकार से रोग भगाया, कंचन जैसे हो गई काया।।17।।
इक लड़के ने पता लगाया, जाके राजा को बतलाया।।18।।
शिव जी की भक्ती ना करते, ना ही चरणों माथा धरते।।19।।
राजा तव मुनि से फरमाए, शिव को क्यों न शीश झुकाए।।20।।

शिव पिण्डी को शीश झुकाओ, वरना ऋषी दण्ड तुम पाओ।।21।।
राजा से तब ऋषि यह बोले, नमस्कार पिण्डी ना झेले।।22।।
राजा ने जंजीर मंगाई, शिव पिण्डी उससे बंधवाई।।23।।
पाठ स्वयंभू ऋषि ने ध्याया, पिण्डी फटी अचम्भा छाया।।24।।
चन्द्रप्रभू की मूर्ति दिखाई, सब ने जय-जयकार लगाई।।25।।
राजस्थान प्रान्त में जानो, टोंक जिला शुभकारी मानो।।26।।
मैंदवास है पास में भाई, अतिशय क्षेत्र बना सुखदायी।।27।।
दुर्गालाल नाथ कहलाया, उसको इक दिन सपना आया।।28।।
प्रतिमा भू के अन्दर प्यारी, श्वेत वर्ण की है मनहारी।।29।।
खोद निकालो इसको भाई, जो है भारी अतिशयदायी।।30।।
आसौज कृष्ण छठवी शुभ जानो, चन्द्रप्रभूजी प्रगटे मानो।।31।।
दूर-दूर से श्रावक आए, प्रभु के पावन दर्शन पाए।।32।।
श्री जिन का अभिषेक कराए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।33।।
पञ्च कमेटी एक बनाए, उस दिन ही मेला भरवाए।।34।।
देव कई दर्शन को आते, छम-छम-छम-छम नचते गाते।।35।।
रोगी अपने रोग नशाते, निर्धन धन सम्पत्ति पाते।।36।।
ग्रहारिष्ट प्रभु चन्द्र के स्वामी, कहलाते है अन्तर्यामी।।37।।
दुखिया निज सौभाग्य जगाते, पुत्र पौत्र के सुख उपजाते।।38।।
जिनवर मेरे कष्ट मिटाओ, सुख शांती का मार्ग दिखाओ।।39।।
'विशद' भावना भाते चन्द्र का, हम बने मोक्ष पथगामी।।40।।

दोहा - चालीसा जिन चन्द्र का, चालिस दिन कर पाठ।
करो कराओ धूप दें, होंगे ऊँचे ठाठ।।
सर्व रोग दुख दूर हो, होय पाप का नाश।
भाग्य बढ़े सुख सम्पदा, है पूरा विश्वास।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।
ॐ ह्रीं मैंदवास स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पुष्पदंत चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण–कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय–जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि है अन्तर्यामी।।1।।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।2।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।।3।।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।।5।।
पितश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।।7।।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकू कुल नन्दन गाए।।8।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जनम लिया यह मानो।।9।।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।10।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।।11।।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।।12।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।।13।।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभू ने पाया।।14।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।।15।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।16।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।17।।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरू वन पुष्प कहाए।।18।।
समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।।19।।

एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।20।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी गाए।।21।।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।22।।
आयू लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।।23।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।24।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालिस गुण के धारी मानो।।25।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।26।।
सुप्रभ कूट रहा शुभकारी, हरा-भरा जो है मनहारी।।27।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनी संग मानो।।28।।
मूल नक्षत्र प्रभू जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।29।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।।30।।
पूजा और विधान रचाए, भाव सहित चालीसा गाए।।31।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।।32।।
जीवन में सुख-शांती पाये, भक्त भाव से जो गुण गाये।।33।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।।34।।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।35।।
कृपा करो हे त्रिपुरारी, रोग-शोक-भय कष्ट निवारी।।36।।
मन जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।।37।।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।38।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।39।।
भव सिन्धू से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, बनें श्री के नाथ।।
विधी सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः।

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा- **प**रमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।।1।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।।2।।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।3।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्षवाकू शुभ वंश उपाए।।4।।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बताए।।5।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।।6।।
शुभ नक्षत्र विशाखा गाया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।7।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।।8।।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।9।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।।10।।
माघशुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।11।।
अपराह्नकाल का समय बताया, एक उपवास प्रभू ने पाया।।12।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।13।।
प्रभू मनोहर वन में आए, तरू पाटला का तल पाए।।14।।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।15।।
आयू लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।।16।।
माघ शुक्ल द्वितिया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।17।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।।18।।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।19।।
गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सनमुख यक्ष प्रभू का मानो।।20।।

एक माह पूरव से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।21।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।।22।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।23।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।।24।।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।25।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।।26।।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।27।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।।28।।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।29।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।।30।।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताई।।31।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयू लाख बहत्तर पाई।।32।।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ती पाए।।33।।
पाँचों कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।।34।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।।35।।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।36।।
सुख-शांती यह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।।37।।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ती पाए।।38।।
यही भावना विशद हमारी, मुक्ती दो हमको त्रिपुरारी।।39।।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।40।।

दोहा- चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांती 'विशद', बनते शिवपति ईश।।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले विशद संयोग।
अनुक्रम से जग जीव वह, पावें शिवपद भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

श्री शांतिनाथ भगवान चालीसा (टोंक नसिया)

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चैत्यालय त्रैलोक के, पुज्य हैं मंगलकार।।
प्रगटे हैं भूगर्भ से, जिनवर शांतीनाथ।
चालीसा गाते विशद, चरण झुका कर माथ।।

(चौपाई)

शांतिनाथ शांती के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।।1।।
पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवे गाए।।2।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।।3।।
हस्तिनापुर नगरी के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।।4।।
रानी ऐरादेवी जानो, जिनके सुत शांती जिन मानो।।5।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराये।।6।।
जणम प्रभू जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।7।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।।8।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।।9।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।।10।।
बत्तिस सहस भूप के स्वामी, बने चक्रवर्ती शुभ नामी।।11।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह श्रेष्ठ रत्न प्रगटाए।।12।।
सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।13।।
सर्य वंश के स्वामी गाये, सारे जग में यश फैलाये।।14।।
बिम्ब देख वैराग्य जगाया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।15।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आए, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।16।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।17।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।18।।
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।19।।

पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।20।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।21।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्मध्वजा जग में फहराए।।22।।
योग निरोध किए जग नामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।23।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।24।।
महा मोक्षफल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।25।।
राजस्थान प्रान्त शुभ जानो, टोंक नगर अतिशय शुभ मानो।।26।।
शर्मा कॉलोनी शुभकारी, जिस भू की है महिमा न्यारी।।27।।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाई, सम्वत् बीस सौ पैंसठ गाई।।28।।
श्री जिनबिम्ब तेईस प्रगटाए, मूलनायक शांती जिन गाए।।29।।
धवल रंग की प्रतिमा न्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।।30।।
जो भी प्रभु के दर्शन पाते, वे मन में अति हर्ष बढ़ाते।।31।।
पूजा अर्चा करते भाई, जो है अतिशय सौख्य प्रदायी।।32।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती उनके मन की कलियाँ।।33।।
वे अपना सौभाग्य जगाते, मन में इच्छित फल वे पाते।।34।।
दुखिया दर पे जो भी आवें, उनके सब संकट कट जावें।।35।।
परिजन सारे साथ निभावें, जो प्रभु का चालीसा गावें।।36।।
बुध ग्रह पीड़ाहारी गाये, संकट सर्व निवारी पाए।।37।।
सुख-सम्पत्ति सद्गुण के दानी, नौ निधि चौदह रत्न के दानी।।38।।
सब क्लेश संकट के हर्त्ता, शांति प्रभु हैं सुख के कर्त्ता।।39।।
मेरा कष्ट निवारो स्वामी, बनूँ विशद मैं शिवपद गामी।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े शांति कर पाठ।
सुख शांती सौभाग्य हो, होवें ऊँचे ठाठं
सर्व रोग दुख दूर हों, होय पाप का नाश।
भाग्य बढ़े सुख-सम्पदा, नित प्रति होय विकास।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री शांतिनाथ चालीसा (सांखना)

दोहा- पावन हैं नव देवता, तीर्थंकर चौबीस।
सांखना के जिन शांति पद, झुका रहे हम शीश।

।।चौपाई ।।

जय जय शांति नाथ शिव कारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।2।।
नगर हस्तिानापुर मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी ।।3।।
राजा विश्व सेन कहलाए, रानी ऐरा देवी पाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, शांतिनाथ जिन अन्तर्यामी ।।5।।
देवों ने तव रहस रचाया, पाण्डुकवन अभिषेक कराया।।6।।
काम देव चक्री पद पाए, छह खण्डों पे राज्य चलाए ।।7।।
राज पाट सब तुमने छोड़ा, सद् संयम से नाता जोड़ा ।।8।।
कर्म घातिया आप नशाए, केवलज्ञान सूर्य प्रगटाए ।9।।
दिव्य देशना आप सुनाए, भव्य जीव तब बोध जगाए ।।10।।
गिरि सम्मेद शिखर पे आये, निज आतम का ध्यान लगाए ।।11।।
योगरोध कर निज को ध्याये, कुन्द कूट प्रभ से शिव पाए।।12।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को जानो, सिद्ध श्री को पाए मानो।।13।।
राजस्थान प्रान्त का भाई, टोंक जिला है अति सुखदायी ।।14।।
ग्राम सांखना जिसमें आए, शांति प्रभू अतिशय दिखलाए ।।15।।
मंदिर अति प्राचीन बताया, शाह गोत्रियों का बनवाया ।।16।।
सोलह सौ इक्तिस शुभकारी, विक्रम संवत की बलिहारी ।।17।।
चन्द्र कीर्ति भट्टारक आए, पंचकल्याणक श्रेष्ठ कराए ।।18।।
शिला लेख से हमने जाना, मंदिर है प्राचीन पुराना।।19।।
मुगलकाल में आतातई, मुर्ति तोड़ते थे जो भाई।।20।।
श्रावक सब मिलकर के आए, मिलकर सभी विचार बनाए।।21।।

अन्य कहीं मुर्ति ले जाएँ, मंदिर का निर्माण कराएँ ।।22।।
सबने मिलकर जोर लगाया, किन्तू निज को असफल पाया।।23।।
जनता तब अति जोर लगाती, मुर्ति बीच से तब फट जाती ।।24।।
तभी दूध का झरना झरता, मंदिर सारा दूध से भरता ।।25।।
स्वप्न भक्त को आया प्यारा, सबसे कहा प्रातः ही सारा ।।26।।
घी आटा बूरा मिलवाओ, गरम गरम सीरा लगवाओ ।।27।।
सांकल से मूर्ती बंधवाओ, पूजा पाठ जाप करवाओ ।।28।।
मूर्ती जुड़ जाएगी भाई, स्वप्न की सारी बात बताई।।29।।
लोगों ने यह कार्य कराया, पर्दा आगे से लगवाया ।।30।।
सांकल टूट गई तव भाई, मूर्ती जुड़ी हुई तव पाई।।31।।
चमत्कार सुनकर सब आए, शांति प्रभू के दर्शन पाए ।।32।।
पंच कल्याण हुआ फिर भाई, अश्विन वदि एकम तिथि गाई।।33।।
मेला तब से लगता आया, अतिशय शांतिनाथ का पाया ।।34।।
धारा दिखे मूर्ति में भाई,घटना की जो देय गवाही ।।35।।
अब भी अतिशय होते भारी, इच्छित फल पाते नर नारी ।।36।।
बुध ग्रह के पीड़ा परिहारी, शांति प्रभू हैं मंगलकारी ।।37।।
दीन दुखी जो दर पे आते, मन वाच्छिंत फल प्राणी पाते ।।38।।
निर्धन धन सम्पत्ती पावें , रोगी अपने रोग मिटावें ।।39।।
अज्ञानी नर ज्ञान जगाते , मन में 'विशद' शांति सब पाते ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस शुभ, प्रतिदिन चालिस बार ।
विशद भाव से जो पढ़ें, पावें सौख्य अपार ।।
धूप अग्नि में डालकर , दीप जलाकर अग्र।
ध्याएँ शांति जिनेश को, वे हों गुणी समग्र ।।

जाप-ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र सांखना स्थित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

दोहा– अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचर्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम विशद, चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

(चौपाई)

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन–जन के हैं तारण हारे।।1।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।।2।।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।3।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टी सुखद जमीं नाशा पर।।4।।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।5।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।।6।।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृही नगरी मन भाए।।7।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।।8।।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।9।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।।10।।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।11।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।।12।।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।13।।
पाण्डुकशिला अभिषेक कराया, जन–जन का तव मन हर्षाया।।14।।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।15।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।।16।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।।17।।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।18।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुपप्रेक्षा।।19।।

सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।20।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।।21।।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।22।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।।23।।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।24।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।।25।।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।26।।
बेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।।27।।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।28।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।29।।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।30।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।।31।।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।32।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।।33।।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।34।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड़गासन से ध्यान लगाए।।35।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।36।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।।37।।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।38।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।।39।।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।40।।

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा (निमोला)

दोहा। तीर्थ निमोला में रहे, पार्श्वनाथ भगवान।
भक्त सभी मिलकर विशद, करते हैं गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
रिद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(चौपाई)

जय जय पार्श्वनाथ जिन स्वामी, आप हुए मुक्ती पथगामी।।1।।
तुमने तीर्थंकर पद पाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाया।।2।।
नगर बनारस हैं शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।3।।
राजा अश्वसेन की रानी, वामा देवी ज्ञानी ध्यानी।।4।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन शिवपथगामी।।5।।
देव तभी ऐरावत लाए, जिस पर प्रभु जी को बैठाए।।6।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, खुश होके जयकार लगाए।।7।।
करने सैर आप वन आए, तपसी को तप करता पाए।।8।।
पञ्चाग्नी तप जिसने धारा, पारस ने उसको ललकारा।।9।।
तपसी क्यों यह आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।10।।
नाग युगल जलते हैं काले, मानो वह हैं मरने वाले।।11।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ा, जलने वाला लक्कड़ फाड़ा।।12।।
सर्प युगल तव उसमें पाया, तपसी देख बहुत घबड़ाया।।13।।
उनको प्रभु जी मंत्र सुनाये, नाग युगल मृत्यू को पाए।।14।।
देवगति में जीवन पाए, धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए।।15।।
मरण हुआ तपसी का भाई, देवगति तब उसने पाई।।16।।
संवर नाम देव ने पाया, मिथ्यावादी जगत् भ्रमाया।।17।।
हुए बाल ब्रह्मचारी स्वामी, संयम धारे अन्तर्यामी।।18।।
कर विहार अहिच्छत्र में आए, वहाँ प्रभु जी ध्यान लगाए।।19।।

संवर देव वहाँ पर आया, उसने अपना वैर भंजाया।।20।।
ओल शोले पत्थर पानी, बरसाए भारी अभिमानी।।21।।
फिर भी स्थिर ध्यान लगाए, प्रभु जी तन को नहीं हिलाए।।22।।
धरणेन्द्र का आसन कम्पाया, पद्मावति को साथ में लाया।।23।।
पद्मावति ने फण फैलाया, प्रभु जी को उस पर बैठाया।।24।।
धरणेन्द्र ने फण को फैलाया, प्रभु के सिर पर छत्र लागाया।।25।।
हार मान संवर तव आया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।।26।।
पार्श्व प्रभु निज ध्यान लगाए, पावन केवलज्ञान जगाए।।27।।
वही तीर्थ अहिच्छत्र कहाए, पात्र केसरी यहाँ पे आए।।28।।
शिष्य पाँच सौ जिसके जानो, ज्ञानी मानी ब्राह्मण मानो।।29।।
पार्श्व प्रभू के दर्शन पाए, जैन धर्म वे सब अपनाए।।30।।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, टोंक जिला जिसमें बतलाया।।31।।
क्षेत्र निमोला है शुभकारी, बतलाया जो अतिशयकारी।।32।।
मंदिर बहुत पुराना गाया, जिसका हाल बेहाल बताया।।33।।
पटवारी प्रकाश जी आए, आस पास के पञ्च बुलाए।।34।।
मंदिर का निर्माण कराए, सुन्दर नई वेदी बनवाए।।35।।
पौष वदी एकादशि जानो, मेला हुआ यहाँ पर मानो।।36।।
गाँव में रथ यात्रा करवाए, फिर कलशाभिषेक कराए।।37।।
प्रभु को वेदी पर पधराए, श्रावक जय जयकार लगाए।।38।।
युगल कबूतर रहता पाए, मानो यक्ष यक्षिणी गाए।।39।।
पूजा प्रभु पद विशद रचाए, वह अपना सौभाग्य जगाए।।40।।

दोहा– चालीस चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांती सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।
दीप जलाकर धूप से, करते हैं जो पाठ।
पुण्योदय जागे विशद, होवे ऊँचे ठाठ।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा (कचनेर)

दोहा- हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा कचनेर का, गाते भाव विभोर।।
इस असार संसार से, पाएँ अब विश्राम।
पार्श्वनाथ जिनराज हे, पद में करें प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लागाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिच्छत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।

धरणेन्द्र पद्मावति आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्णको चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण–भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्र हीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवपुर जाते।।34।।
कचनेर औरंगाबाद जान, गौा दूध झराए वहाँ आन।।35।।
थे सेठ वहाँ सम्पत सुराय, उनकी दादी शुभ स्वप्न पाय।।36।।
भू के अन्दर पारस जिनेश, तुम खोद निकालो जो विशेष।।37।।
मूर्ती खण्डित हुई एक बार, नई मूर्ती का कीन्हे विचार।।38।।
तव स्वप्न देख लक्ष्मी सुराय, घी बूरा में प्रतिमा रखाय।।39।।
तव मूर्ति जुड़ी यह कहें लोग, यह चमत्कार का बना योग।।40।।

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री महावीर चालीसा (चाँदनपुर)

दोहा – सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

चौपाई

जय–जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।।1।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।।2।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।।3।।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।4।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के रवि कहलाए।।5।।
षष्ठी शुक्ल अषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।6।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जनम प्रभू ने जिस दिन पाया।।7।।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।8।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।।9।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।10।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।।11।।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।12।।
मन में प्रश्न मुनी के आया, जिसका समाधान न पाया।।13।।
देख प्रभू को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभू का दीन्हा।।14।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।।15।।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।16।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तू प्रभु नहीं घबराए।।17।।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।18।।

उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीरनाम प्रभु का बतलाया।।19।।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।20।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।।21।।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।22।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।।23।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।24।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।।25।।
तृतिय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।26।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ गाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।।27।।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरू तल ध्यान लगाए।।28।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।।29।।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।30।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।।31।।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाया।।32।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।।33।।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।34।।
ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।।35।।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।36।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।।37।।
पावागिरि तीर्थ कहलाए, चांदनपुर में प्रभु प्रगटाए।।38।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।39।।
चरण कमल में हम सिर नाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।।40।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख–शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

आचार्य श्री विशद सागर जी चालीसा

दोहा – आचार्य प्रवर को नमन है, करे पाप का नाश।
श्री गुरुवर की अर्चना, करती आत्म प्रकाश।।
स्वार्थ रहित जो भी करे, भक्ती अपरम्पार।
चालीसा को सब पढ़ें, नितप्रति बारम्बार।।

चौपाई

जय जय जय गुरुदेव हमारे, जैन धर्म के आप सितारे।।1।।
ज्ञानकरण्य आपने पाया, सर्व जगत् में नाम कमाया।।2।।
जय गुरुदेव जी नमस्कार है, रत्नत्रय का चमत्कार है।।3।।
नाथूराम के राज दुलारे, इन्दर माँ के नयन के तारे।।4।।
कुपी ग्राम में जन्म है पाया, आँगन में एक रवि है आया।।5।।
मात-पिता का मन हर्षाया, नाम रमेश आपने पाया।।6।।
युवा अवस्था तुमने धारी, मन ही मन में सोच निराली।।7।।
विराग सिन्धु को किया समर्पण, देख आपने निज का दर्पण।।8।।
जीवन की अनुपम है बगिया, मुरझाएँ ना अन्तर कलियाँ।।9।।
मुनिवर के व्रत तुमने पाये, नग्न दिगम्बर रूप में आये।।10।।
कर्मों को तुम मार रहे हो, अपने भाव सम्हार रहे हो।।11।।
स्वर्गों में भी चर्चा होती, देवों द्वारा अर्चा होती।।12।।
जन जन के हो प्यारे गुरुवर, रहते जग से न्यारे गुरुवर।।13।।
निज में निज का चिंतन करके, जिनवाणी का मंथन करके।।14।।
समता रस को धारण करते, दुःखों से तुम कभी न डरते।।15।।
स्वर्गों की तुम्हें चाह नहीं है, भव सुख की परवाह नहीं है।।16।।
वैद्यों के तुम वैद्यराज हो, रोगों का करते इलाज हो।।17।।
बच्चे बूढ़े सब आते हैं, नाम तुम्हारा सब ध्याते हैं।।18।।
वाणी के नित झरने झरते, दुःखों को तुम सबके हरते।।19।।

धनी गरीब का भेद न करते, दया भाव तुम सब पर धरते।।20।।
महावीर के तुम अनुयायी, जैनधर्म की शिक्षा पाई।।21।।
निज में तुम अवगाहन करते, काय क्लेष का पालन करते।।22।।
आशिष की महिमा जो पाए, खाली झोली भर के जाए।।23।।
कीर्ति तुम्हारी जग में न्यारी, गुण गाती है जगती सारी।।24।।
क्रोध मान तुम कभी न करते, स्व गुण में तुम सदा विचरते।।25।।
आतम चिंतन में चित् धरते, मूल गुणों का पालन करते।।26।।
स्याद्वादमय तेरी वाणी, जग में तुम सम कोई न ज्ञानी।।27।।
ऋषियों के तुम ऋषीराज हो, धर्म के तुम तारण जहाज हो।।28।।
रागद्वेष तुम कभी न करते, परिषहों को हस कर सहते।।29।।
काया में अनुराग न करते, वैरागी हो आप विचरते।30।।
कई विधान के आप रचयिता, मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता।।31।।
संसारी सब वस्तु निराली, कल्पवृक्ष की तुम हो डाली।32।।
स्वर्ण जयंति का अवसर आया, हर्ष सभी के मन में छाया।।33।।
भक्त गुरु भक्ती को आए, पूजा कई विधान रचाए।34।।
गाये कई जो भजनाबलियाँ, खिली हृदय की उनके कलियाँ।।35।।
गुरु चरणों में शीश झुकाते, भाव से गुरु की महिमा गाते।।36।।
उनने अतिशय पुण्य कमाया, मिली गुरु की जिनको छाया।।37।।
कोई श्रद्धा ज्ञान जगाए, कोई गुरु से संयम पाए।।38।।
गुरु महिमा को कह न पाएँ, 'सपना' भी गुरुगुण को गाये।।39।।
अन्त समय में गुरु पद पावें, शिवपुर में ही धाम बनावें।।40।।

दोहा– मैं बालक अल्पज्ञ हूँ, नहीं है मुझ में ज्ञान।
गुरु चालीसा नित पढ़ूँ, करू गुरु का ध्यान।।
चालीसा चालीसा दिन, सुबह पढ़ों या शाम।
कार्य पूर्ण हो जायेगा, रखो हृदय श्रद्धान।।

– ब्र. सपना दीदी

चौबीस तीर्थंकर आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्–2।टेक।।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...

श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...

शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

अमीर गंज टोंक स्थित

श्री आदिनाथ जिन की आरती टोंक नसिया

आज करें हम बड़े बाबा की, आरती मंगलकारी–2।
घृत का दीप जलाकर लाए–2, बाबा तुमरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।। टेक।।

नाभिराज मरुदेवी के नन्दन, अदिनाथ कहलाए–2।
नगर अयोध्या जन्म लिया प्रभु–2, मोक्ष मार्ग अपनाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

धर्म प्रवर्तन करने वाले, हे आदीश्वर स्वामी–2।
षट् कर्मों के शिक्षा दाता–2, जिनवर अन्तर्यामी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

धनुष पाँच सौ शुभ ऊँचाई, स्वर्ण वर्ण के धारी–2।
आयु लाख चौरासी पाये–2, तीर्थंकर अविकारी–2।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

टोंक जिले की नशियाँ में है, प्रतिमा अतिशयकारी–2।
वीतराग दर्शाने वाली–2, पावन है मनहारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

प्रभु चरणों में विशद भाव से, जो भी शीश झुकाते–2।
मनोकामना पूरी करते–2, इच्छित फल को पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

आज करें हम बड़े बाबा की, आरती मंगलकारी–2।
घृत का दीप जलाकर लाए–2, बाबा तुमरे द्वारे।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- श्री बाहुबली की आरती उतारो ...)

श्री आदिनाथ की आरती , उतारो मिल के ।
उतारो मिल के, छवि निहारो मिल के ।।
श्री आदिनाथ की आरती, उतारो मिल के ।।टेक ।।
पूर्व भवों में पुण्य कमाए, तीर्थंकर पदवी को पाए ।
गर्भ में आए थे स्वामी तब, देव रत्न वर्षाए मिल के ।।
श्री आदिनाथ की .. ...।।1 ।।
जन्म प्रभू जी जिस दिन पाए, तीन लोक में आनन्द छाए ।
मेरु सु गिरि पे न्हवन कराने, इन्द्र ऐरावत लाया चलके ।।
श्री आदिनाथ की .. ...।।2 ।।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए,द्वादश अनुप्रेक्षाएँ ध्याए।
पंच महाव्रत धारे स्वामी, केशों का लुंचन करके ।।
श्री आदिनाथ की .. ...।।3 ।।
कर्म घातिया आप नशाए, पावन केवलज्ञान जगाए ।
इन्दाज्ञा से समवशरण की, रचना इन्द्र किए सौ मिलके ।।
श्री आदिनाथ की .. ...। ।4 ।।
योग निरोध किए जिन स्वामी , ध्यान किए जिन अन्तर्यामी ।
अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु , सिद्ध शिला पर पहुँचे चलके ।।
श्री आदिनाथ की .. ...।।5 ।।
भक्त आपके द्वारे आए, घृत का दीप जलाकर लाए ।
' विशद' भाव से आरति करते, भक्त सभी भक्ती से मिलके ।।
श्री आदिनाथ की .. ... ।।6 ।।

श्री पद्मप्रभु जी की आरती (बाड़ा ग्राम)

।। तर्ज- करहूँ आरती आज ।।

करहूँ आरती आज, पदम प्रभु तुमरे द्वारे ।
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे, विशद ज्ञान के ताज ।।
पदम प्रभु तुमरे द्वारे... ।। टेक ।।

मात सुसीमा के तुम प्यारे-2, धरण राज के राजदुलारे -2
कौशाम्बी महाराज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे-
करहूँ आरती ....

इन्द्रराज ऐरावत लाया -2 , जिस पर प्रभु जी को बैठाया -2
न्हवन किया शुभकार, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती . ...

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी स्वामी-2, जन्म लिए जिन अर्न्तायामी-2
किए सभी जयकार, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती . ...

जाति स्मरण आपको आया -2, मन में तव वैराग्य जगाया-2
संयम धारा आप, जिनेश्वर तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती .....

गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी -2, मोहन कूट गये जगनामी-2
पाए शिव का राज, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती . ...

विशद भावना मन में भाएँ-2, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए -2
मिले मोक्ष साम्राज्य, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती . ...

बाड़ा के प्रभु को जो ध्याते -2, वे अपने सौभाग्य जगाते -2
सफल होय सब काम, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे-
करहुँ आरती . ...

श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।।
ॐ जय....

महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।
ॐ जय....

आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व-पर उपकारी।।
ॐ जय...

पंच माहव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।
ॐ जय....

इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।।
ॐ जय..

तुमको ध्याने वाला, सुख-शांति पाये।
विशद आरती करके, मन में हर्षाये।।
ॐ जय....

प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।
ॐ जय....

तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।
भक्त खड़े चरणों में, सारे कष्ट हरो।।
ॐ जय....

श्री शांति कुन्थु अरहनाथ भगवान की आरती

तर्ज- ॐ जय.....

ॐ जय त्रय पद धारी, स्वामी जय त्रय पद धारी ।
शांति कुन्थु अर वन्दौं , सब संकट हारी ।।
ॐ जय त्रय पद धारी।।टेक।।

नगर हस्तिानापुर के स्वामी, सूर्य वंश पाए- स्वामी सूर्य वंश पाए ।
गर्भ-जन्म -तप ज्ञान कल्याणक 2, प्रभु जी प्रगटाए ।।
ॐ जय ।।1।।

काम देव चक्री तीर्थंकर , त्रय पद के धारी-स्वामी त्रय पद के धारी ।
यह संसार असार जानकर-2 हो गये अविकारी ।।
ॐ जय ।।2।।

खड्गासन से प्रभू आपने, अतिशय ध्यान किया-स्वामी अतिशय ध्यान किया।
गिरि सम्मेद शिखर से-2 पद निर्वाण लिया।।
ॐ जय ।।3।।

नगर-नगर में शांति कुन्थु अर, की जिन प्रतिमाएँ-स्वामी की जिन प्रतिमाएँ।
वीतराग ही मोक्ष मार्ग है -2 महिमा दर्शाएँ।।
ॐ जय त्रय ।।4।।

रत्नत्रय दर्शाने वाले , त्रय जिनवर गाए -स्वामी त्रय जिनवर गाए ।
आरति करने तीन योग से- 2 'विशद ' चरण आए ।
ॐ जय ।।5।।

ॐ जय त्रय पद धारी, स्वामी जय त्रयपद धारी।
शांति कुन्थु अर वन्दौ, सब संकट हारी ।।
ॐ जय त्रय पद धारी ।।6।।

टोंक नसिया स्थित श्री शांतिनाथ जिन आरती

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।।टेक।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।
वन्दे जिनवरम्-2, वन्दे जिनवरम्-2।।
नगर हस्तिनापुर में जन्में, माता-पिता हर्षाए थे।
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए थे।।
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।।
जगमग-जगमग...।।1।।
जानके जग की नश्वरता को, निजवर दीक्षा पाई थी।
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी।।
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ! आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग...।।2।।
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं।
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं।।
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।।
जगमग-जगमग...।।3।।
राजस्थान के टोंक जिले में, अतिशय बड़ा दिखाया है।
श्वेत रंग की पावन प्रतिमा, चमत्कार फैलाया है।।
हर दुखिया का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग...।।4।।
नसियाँ जी के शांति प्रभु की, आरती करने आए हैं।
चरण-शरण के भक्त सभी हम, द्वीप जलाकर लाए हैं।।
विशद करें हम जय-जयकारे, अतिशय क्षेत्र महान की।।
जगमग-जगमग...।।5।।

श्री मुनिसुव्रत भगवान आरती

मुनिसुव्रत की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।। टेक।।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे। मुनि...
राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए। मुनि...
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई। मुनि...
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी। मुनि...
दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी। मुनि...
वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया। मुनि...
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया। मुनि...
फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ती पाई। मुनि...
गिरि सम्मेद शिखर शुभ पाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया। मुनि...

मुक्तक

* नहीं थी कल्पना जिसकी, वो अवसर आज आया है।
गुरु दीक्षा दिवस आके, यहाँ पर जो मनाया है।।
बड़े सौभाग्यशाली को, गुरु आशीष मिलता है।
सभी का भाग्य उदय था जो, ये अवसर आज पाया है।।

* गुरु का दर्श पाकर के, सूर्य भी हर्षमय होगा।
यहाँ का आज कण-कण, शुभ विशद दर्शमय होगा।।
करे जो दर्श गुरुवर का, भाव से जो यहाँ आके।
ये जीवन का हरेक पल भी, शुभम् उत्कर्षमय होगा।।

* विशद संसार सागर के, गुरु तुम तीर लगते हो।
सती की लाज ढकने को, गुरु तुम चीर लगते हो।।
सुना महावीर को हमने, मिला न दर्श है उनका।
गुरु कलिकाल के हमको, स्वयं महावीर लगते हो।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान आरती

तर्ज - आज करे हम ....

आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब उतारे तेरी आरती, हो प्रभुवर हम सब ..।टेक।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर-हम सब .....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टीकर -2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब .....।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर - हम सब .....।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर- हम सब .....।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी भक्ती करने, चरण शरण हम आए।।
हो जिनवर - हम सब .....।।5।।
आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब ..... ।।टेक।।

श्री महावीर भगवान की आरती

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब..।।टेक।।

कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी, आरती... हो वीरा...।।1।।

चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती...हो वीरा...।।2।।

मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते हैं थारी आरती.... हो वीरा।।3।।

दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवलज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु, विशद मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है प्यारी।
जिनबिम्बों की करते हम सब आरती...।।4।।

बड़े अरमान थे मेरे, प्रभु का दर्शन पाएँगे।
तीर्थ की वन्दन करेंगे, गिरि सम्मेद शिखर पाएँगे।।
विशद यह भावना मेरे, मरण मेरा समाधि हो।
समाधि के लिए हम भी, यह सिद्ध भूमि पाएँगे।।

आरती बाहुबली जी की आरती

तर्ज :भक्ति बेकरार है...

बाहुबली दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
भक्त यहाँ पर भक्ती करके, करते जय जयकार हैं।।टेक।।

तीर्थंकर के पुत्र कहाए, कामदेव पद पाया जी-2।
चक्रवर्ति से भूप भरत को, रण में शीघ्र हराया जी-2।।
बाहुबली दरबार है.....।।1।।

जागा जब वैराग्य हृदय में, वन को आप सिधाए जी-2।
एक वर्ष तक खड़े रहे प्रभु, अतिशय ध्यान लगाया जी-2।।
बाहुबली दरबार है.....।।2।।

प्रभु के तन पर जीव जन्तुओं, ने स्थान बनाया जी-2।
हाथ पैर में बेलें लिपटी, निज में निज को पाया जी-2।।
बाहुबली दरबार है.....।।3।।

तीर्थंकर से पहले ही प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए-2।
भव सागर से पार हुए तुम, शिवपुर नगरी वास किए-2।।
बाहुबली दरबार है.....।।4।।

आरति करके प्रभु चरणों में, 'विशद' भावना भाते हैं जी-2।
ज्ञान-ध्यान हो लक्ष्य हमारा, सादर शीश झुकाते जी-2।।
बाहुबली दरबार है.....।।5।।

कोई ब्रह्मा कोई विष्णु, कोई श्री राम को ध्याते।
कोई अफसर कोई श्रेष्ठी, कोई नेता के गुण गाते।।
तुम्हारा कर्म ही तुमको जमाने में सजा देगा।
अरे! इंसान क्या भगवान भी तो कर्मफल पाते।।

क्षेत्रपाल जी की आरती

(तर्ज : हो जनवर हम सब उतारे तेरी आरती..)

आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।टेक।।

छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2।
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।1।।

लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2।
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।2।।

कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2।
बाजू बंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।3।।

अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2।
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।4।।

सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2।
पुत्रादिक धन सम्पत्ती की-2, बांछा पूरी करते।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।5।।

आज करें हम क्षेपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।।6।।

पद्मावती माता की आरती

(तर्ज–भक्ति बेकरार है...)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय–जयकार है।।टेक।।

माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी–2।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी–2।। माता...।।1।।
माता का दरबार है ...

जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी–2।
पुत्र–पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी–2।।2।।
माता का दरबार है ...

शाकिन–डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी–2।
बात–पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी–2।।3।।
माता का दरबार है ...

त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी–2।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी–2।।4।।
माता का दरबार है ...

दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी–2।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी–2।। 5।।
माता का दरबार है ...

कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्र नाम बतलाए जी–2।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी–2।।6।।
माता का दरबार है ...

दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी–2।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी–2।।7।।
माता का दरबार है ...

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज - ॐ जय .....)

ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमरे अनुचर।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।टेक।।

ग्राम कुपी में जन्म लिया माँ, इन्दर उर आये-स्वामी इन्दर..।
धन्य पिता श्री नाथूराम जी-2, श्रेष्ठ पुत्र पाये।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।1।।

तज के भोग विलाश जगत के, धर्म ध्यान कीन्हे-स्वामी धर्म...।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर-2, व्रत प्रतिमा लीन्हे।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।2।।

विजय प्राप्त करने कर्मों पर, परिजन तज आए-स्वामी परि...।
सिद्ध क्षेत्र श्रेयांश गिरि पर-2, ऐलक पद पाए।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।3।।

गुरुवर श्री विराग सागर से, मुनिव्रत ग्रहण किए-स्वामी मुनि।
द्रोणगिरि में दीक्षा लेकर-2, निज में लीन हुए।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।4।।

गुरुवर श्री भरत सागर से, पद आचार्य मिला-स्वामी पद...।
मालपुरा नगरी को-2, पावन श्रेय मिला।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।5।।

क्षमामूर्ति गुरुवर जी देखो, सबके मन भाए-स्वामी सबके..।
विशाल आरती करके-2, गुरु के गुण गाए।।
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।6।।

ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमरे अनुचर
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर।।टेक।।

- रचयिता मुनि विशाल सागर